डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 19 | अंक 03 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | गुरुवार 10 अक्टूबर 2024 | मूल्य 2 रुपया

शोएब से मिलने के बाद ड्रग्स पर डायवर्ट हुआ था हरीश..!

पांच साल में एमपी-राजस्थान सहित अन्य राज्यों में भी खड़ा किया नेटवर्क

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। भोपाल की एक ड्रग्स फैक्टरी से 1800 करोड़ रूपए कीमत की ड्रग्स पकड़ाने के मामले में मंदसौर जिले के हरीश आंजना सहित तीनों आरोपियों से पूछताछ जारी है। इधर भोपाल में कार्रवाई के बाद ड्रग्स के कारोबार के तार मंदसौर से जुड़े तो समीपस्थ राजस्थान के प्रतापगढ़ का नाम भी सामने आया। जिसमें देवल्दी के शोएब लाला भी इस बड़े गौरखधंधे का मुख्य किरदार के रूप में उभरकर सामने आया है। पूछताछ में यह भी सामने आया कि 2019 में जब हरीश डोडाचूरा के मामले में पकड़ाया था तो मंदसौर जैल में वह शोएब लाला के गुर्गो के संपर्क में आया और बाहर आने के बाद उसने शोएब के साथ मिलकर ड्रग्स के धंधे में कदम बढ़ा दिया। वह डोडाचूरा के धंधे से दूरी बनाकर सिंथेटिक ड्रग्स सप्लाय का नेटवर्क खड़ा करने में लग गया। पांच साल में मध्यप्रदेश, राजस्थान सहित दूसरे राज्यों में ड्रग्स का नेटवर्क खड़ा कर डाला।

सूत्रों का कहना है कि जैल में रहते हुए हरीश पिता नारायणसिंह आंजना की मुलाकात राजस्थान के ड्रग तस्कर शोएब लाला के गुर्गों से हुई थी। जैल से छूटते ही वह शोएब लाला के ड्रग्स नेटवर्क का अहम हिस्सा हो गया था। वह मंदसौर से ही भोपाल-इंदौर सहित देश के दूसरे शहरों में एजेंट्स के जरिए ड्रग सप्लाई करने लगा। इस दौरान मंदसौर के माल्या खेरखेडा गांव में उसने अपना आलीशान मकान बनवाया। महंगी गाड़िया खरीदी और ऐशो-आराम की जिंदगी जीने लगा।

वह डोडा-चूरा की तस्करी छोड़ एमडी ड्रग्स की सप्लाई करने लगा। इसी दौरान भोपाल में ड्रग्स फैक्ट्री खोलने की प्लानिंग हुई। मुंबई का सान्याल बाने जब जैल से छूटकर बाहर आया तो उसे फैक्ट्री डालने के लिए शुरूआती 50 लाख रुपए की मदद हरीश आंजना ने ही की थी। आंजना ने सान्याल से कहा था कि वो गुजरात से कच्चा माल यानी केमिकल उसे भोपाल पहुंचा देगा। इसके बाद सान्याल ने अमित चतुर्वेदी से फैक्ट्री के लिए जगह का बंदोबस्त करने को कहा। फैक्ट्री में बने ड्रग्स की 2 खेप मंदसौर पहुंचाई गई। इसके बाद आंजना ने प्रेमसुख पाटीदार के मार्फत पहली खेप को ठिकाने पर भेज दिया था।

देवल्दी के तस्करों को एटीएस ने किया था गिरफ्तार...

कुछ समय पहले महाराष्ट्र एटीएस ने देवल्दी से तीन ड्रग माफियाओं हकीम गुल खान,जीवनलाल मीना और अमीना हमजा शेख को पकडा था। 56 वर्षीय हकीम और 21 वर्षीय जीवनलाल को अक्टूबर 2021 में लगभग 5 किलो हेरोइन के साथ गिरफ्तार किया था। एटीएस ने इनको पकड़ने के लिए एक गुप्त अभियान चलाया था, जो हेरोइन बेचने के लिए डोंगरी आए थे। जप्त दवाओं का बाजार मूल्य 15 करोड़ रुपए बताया था। मुंबई में देवल्दी के तस्करों की कोई अनजान महिला वहां मदद करती है और तस्करी की बड़ी सौदागर भी है।

अखेपुर में भी ड्रग्स का बड़ा कारोबार...

जिले के अखेपुर गांव में ड्रग्स का बड़ा कारोबार चल रहा है। यहां के तस्कर बड़े लेवल पर ड्रग की सप्लाई करते हैं। पुलिस जब भी आरोपियों की तलाश में आती है, तो यहां के तस्कर घर की महिलाओं को आगे कर देते हैं। प्रतापगढ़ पुलिस की टीम ने पहले भी अखेपुर गांव में दबिश दी थी, इसमें आरोपी रफीक को गिरफ्तार किया गया था। उसके भाई गुलनवाज ने पुलिस पर फायरिंग की और भाग गया था। इस गांव से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ड्रग की सप्लाई की जाती है। भोपाल ड्रग्स कांड में भी अखेपुर में गुजरात एटीएस और मध्यप्रदेश पुलिस ने दबिश दी थी। पुलिस सूत्रों के अनुसार मध्यप्रदेश के लसुड़िया गांव से खानशेर को डिटेन करने की बात भी सामने आ रही है। खानशेर पर पहले भी तस्करी के कई मामले दर्ज है और मुंबई में भी ड्रग्स की किसी फैक्ट्री के साथ इसके सबंध की बात सामने आ रही है। इसी मामले में अखेपुर गांव में भी टीमों ने दबिश देकर वाहन जप्त किए थे और संदिग्धों को लेकर जांच-पड़ताल की थी।

यह है हरीश का 32 साला इतिहास...

आरोपी हरीश आंजना बेहद महत्वाकांक्षी है। साल 2015 में उसने अपने गांव के सरपंच का चुनाव लड़ा था, लेकिन हार गया। चुनाव हारने के बाद भी बीजेपी के लिए काम करता रहा। साल 2019 में पहली बार वह डोडाचूरा की तस्करी में पकड़ा गया। जैसे ही उसका तस्करी में नाम आया, पार्टी ने उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया था। एक महीने बाद वह जैल से छूटा, तब प्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी। उसने कांग्रेस के नेताओं से संपर्क बनाए। इस दौरान उसकी मुलाकात कांग्रेस नेता राकेश पाटीदार के साले प्रेमसुख पाटीदार से हुई। वर्ष 2020 में कांग्रेस की सरकार गिर गई। इसके बाद वह फिर बीजेपी नेताओं से नजदीकी बढ़ाने में जुट गया। वर्ष 2022 में ग्वालियर में उसके खिलाफ एक बार फिर एनडीपीएस एक्ट का मामला दर्ज हुआ। इसी वर्ष उसने अपने क्षेत्र से जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ने की पूरी तैयारी कर ली थी, लेकिन आपराधिक केस में नाम आने के बाद बीजेपी ने उससे किनारा कर लिया। आंजना ने भी जिला पंचायत का चुनाव नहीं लडा। इसके बाद वह पूरी तरह से तस्करी के धंधे में उतर गया। आंजना के गांव माल्या खेरखेडा में लोग उसके खिलाफ कोई बात सुनने को तैयार नहीं है। वे कहते हैं कि हरीश आंजना लोगों की मदद किया करता था। उसकी गिरफ्तारी के बाद लोग कहते हैं कि उसे फंसाया गया है। वह ऐसा आदमी नहीं है।

प्रेमसुख को दबोचने की तैयारी, कई और काम में आएंगे...

एनसीबी और गुजरात एटीएस के साथ ही मंदसौर पुलिस पूरी सरगरमी से हरीश के साथी प्रेमसुख पाटीदार को तलाश रही है। पुलिस सूत्रो की माने तो बुधवार-गुरुवार की रात उसे दबोचने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। इधर सूत्रो की बात पर भरोसे करें तो प्रेमसुख के आते ही बड़ी संख्या में ड्रग पेडलरो के नाम सामने आ सकते है। बताते है कि हरीश का 50 प्रतिशत माल प्रेमसुख खपाता था। यदि यह सही है तो उसने जिन-जिन लोगो को माल दिया होगा, वे सभी पहले ही भूमिगत हो गए होंगे।

हवालाबाजों के मोबाईल बंद...

इधर हरीश सहित अन्य तस्करो के लिए हवाला के जरिए रूपए मंगाने और भेजने का काम करने वाले हवालाबाजो के मोबाईल बुधवार से बंद रहे। पुलिस भी अब इस ओर ध्यान लगा रही है। जानकार बताते है कि यदि हवाले से रूपए का लेनदेन बंद हो जाए तो तस्करी का 80 प्रतिशत काम वैसे ही ठप्प पड़ जाए। बस जरूरत है कि प्रदीप, अशफाक, मिश्रा और रमेश जैसे लोगो से कड़क पूछताछ की। हालांकि, बुधवार को सभी के मोबाईल बंद रहे।

नगर परिषद की नकली सील से प्रमाणपत्र बनाने वाले दो लोगों को पांच-पांच साल की सजा

गरोठ, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। बीती 04 जनवरी 2024 को मुख्य नगर पालिका अधिकारी भैसोदा ने चौकी भैसोदामण्डी को लिखित आवेदन पत्र प्रस्तुत किया था कि दो लोगो ने नगर परिषद की नकली सील बनाकर फर्जीवाड़ा किया है। यह भी कहा गया था कि फिनोवा कैपिटल प्रायवेट लिमिटेड बैंक रामगंजमण्डी द्वारा भवानी खारोल व गजानंद खारोल का अनापत्ति प्रमाण पत्र सत्यापन हेतु भेजा गया था। जिसे नगर पालिका के रिकार्ड से मिलान किया तो उक्त प्रमाण पत्र फर्जी होना पाया गया। मुख्य नगर पालिक अधिकारी की रिपोर्ट पर पुलिस थाना भानपुरा पर अपराध धारा 109, 420, 467, 468, 471, 34 भादवि का पंजीबद्ध किया गया।

तत्कालीन चौकी प्रभारी कपिल सौराष्ट्रीय द्वारा विवेचना के दौरान आरोपी भवानी लाल पिता मथुरालाल खारोल उम्र 50 साल निवासी रगस पुरिया थाना भानपुरा और रोहित टेलर पिता श्याम लाल टेलर उम्र 25 साल निवासी मिङ्न खेड़ी थाना भानपुरा को गिरफ्तार कर आरोपियो से नगर परिषद भेसोदा की 02 फर्जी सीले, स्टाम्प मेकर मशीन व फर्जी प्रमाण पत्र जप्त किया गया। फिनोवा बैंक के लोन एडवाईजर आरोपी रोहित टेलर के हस्तलिपि के नमूने लेकर जांच हेतु पुलिस मुख्यालय भेजे गये। पुलिस द्वारा विवेचना पूर्ण कर अभियोग पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। पुलिस मुख्यालय से प्राप्त हस्तलिपि जांच में फर्जी प्रमाण पत्र में लिखित हस्तलिपि आरोपी रोहित टेलर की होना पायी गई। प्रकरण में अपर सत्र न्यायालय भानपुरा जितेन्द्र कुमार पाराशर द्वारा आरोपी भवानीखारोल एवं रोहित टेलर को धारा 420, 467, 468, 471, 34 भादवि में दोषी पाते हुये धारा 467 भादवि में 5 वर्ष के कठोर कारावास, धारा 420 एवं 468 भादवि में 3 वर्ष के कठोर कारावास व धारा 471 भादवि में एक वर्ष के कठोर कारावास व जुर्माने से दण्डित किया गया। प्रकरण की पैरवी एजीपी हरिवल्लभ पाटीदार द्वारा की गई। घटना के मात्र 9 माह में एवं साक्ष्य प्रारंभ होने के मात्र 6 माह में प्रकरण का विचारण पूर्ण करवाये जाने में आरक्षक राजकुमार भट्ट का सरानीय योगदान रहा। प्रकरण की विवेचना उनि कपिल सौराष्ट्रीय द्वारा की गई।

बस स्टेण्ड पर खेल रहे थे ताशपत्ति से जुआ

63 हजार रूपए से अधिक की राशि और 8 मोबाइल बरामद

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। शहर कोतवाली पुलिस ने महाराणा प्रताप बस स्टैंड यात्री प्रतीक्षालय से 6 लोगों को अवैध रूप से ताशपत्ति से हार जीत का दाव लगाकर जुआ खेलते हुए पकड़ा है। आरोपियों के कब्जे से 63 हजार रूपए से अधिक की नगदी और आठ मोबाइल बरामद किए गए है। मामले में पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ जुआ अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज किया है।

शहर कोतवाली पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार मुखबीर से सूचना मिली थी कि कुछ लोग महाराणा प्रताप बस स्टैंड के निकट टोली बनाकर अवैध रूप से हार जीत का दाव लगाकर जुआ खेल रहे हैं। सूचना पर पुलिसने शहर के महाराणा प्रताप यात्री बस स्टैंड पर दबिश देकर मौके से शेरू उर्फ गंसु, पिता शौकत मेवाती निवासी नयापुरा, सदाकत पिता शौकत खां मेवाती निवासी नयापुरा, प्रकाश पिता चंपालाल सूर्यवंशी निवासी जनकपुरा, मुकेश पिता कंवरलाल गुर्जर निवासी प्रतापगढ, जगदीश पिता भंवरलाल निवासी अरनिया जटिया, शाहिद पिता कल्लन खां मेवाती निवासी नयापुरा को मौके से जुआ खेलते हुए पकड़ा गया है। इनके कब्जे से पुलिस ने 63 हजार 540 रूपए नगद और 8 मोबाइल बरामद किए है। आरोपियों के खिलाफ जुआ अधिनियम के अंतर्गत प्रकरण दर्ज किया गया है।

सोना-चांदी में मंदी..!

सोना 900 रुपए तक टूटा, चांदी में 1 हजार रुपए से ज्यादा की गिरावट

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। त्यौहारो की शुरुआत के साथ ही खरीदारी का दौर शुरु हो चुका है। अच्छी बात यह है कि नवरात्रि के दौरान सोने-चांदी के दामों में भारी गिरावट शुरु हुई है। सोना-चांदी अंतराष्ट्रीय बाजार में अब तक के हाई से नीचे आ गये है। इसका असर मंदसौर के सराफा बाजार में भी देखने को मिल रहा है। एक बार फिर स्थानीय सराफा बाजार में सोने-चांदी के दामों में भारी गिरावट देखने को मिली है। बुधवार को सोना नगद में 900 रुपये टूटकर 77 हजार रुपये प्रति दस ग्राम और चांदी 1200 रुपये टूटकर 87 हजार 900 रुपये प्रति किलो पर आ गई है। वैश्विक बाजारों मे मंदी के रुख के कारण सटोरियों की मुनाफा वसूली की ताजा बिकवाली के चलते सोने- चांदी की कीमतें नीचें आ गई है।

स्कूल वालों को पढ़ाया जागरुकता का पाठ

वाहनों में बच्चों की सुरक्षा को लेकर दिए निर्देश

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। पुलिस कप्तान श्री अभिषेक आनंद द्वारा पुलिस कंट्रोल रूम मंदसौर पर मंदसौर शहर के सभी शासकीय-अशासकीय स्कूल के संचालक, प्रधान अध्यापक तथा प्रतिनिधियों की बैठक ली गई।

बैठक का मुख्य विषय विद्यालय द्वारा चलाई जाने वाली बसों तथा निजी रूप से चलने वाले ऑटो रिक्शा, मैजिक वाहनों में छात्र-छात्राओं की सुरक्षा से संबंधित था। सर्वोच्च न्यायालय तथा केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मध्य प्रदेश बाल अधिकार संरक्षण आयोग की छात्र-छात्राओं की सुरक्षा से संबंधित गाइडलाइन से पुलिस कप्तान द्वारा सभी स्कूल कॉलेज से आए प्रतिनिधियों को अवगत कराया गया। सभी को हिदायत दी गई कि सभी निर्देशों का पालन सुनिश्चित किया जावे। स्कूल वाहनों में जीपीएस, पैनिक बटन, सीसीटीवी कैमरा, स्पीड लिमिट डिवाइस आदि की उपलब्धता सुनिश्चित हो। स्कूल वाहन में ड्राइवर, कंडक्टर की आपराधिक पृष्ठभूमि ना हो इसके लिए उनका आवश्यक रूप से चरित्र सत्यापन रूप से करवाए, जिन वाहनों में छात्राएं यात्रा करती है। उनमें आवश्यक रूप से महिला अटेंडर उपलब्ध हो, केंद्रीय मोटर व्हीकल एक्ट द्वारा आवश्यक सभी दस्तावेज यथा रजिस्ट्रेशन फिटनेस आदि हो। निर्देशों के अनुरूप यदि किसी स्कूल वाहन में कमी हो तो अतिशीघ्र पूर्ण करवाई जाए।

कई स्कूलों में निजी ऑटो रिक्शा, मैजिक द्वारा छात्र-छात्राओं का आवागमन होता है। ऐसे ऑटो रिक्शा, मैजिक वाहन का रिकॉर्ड विद्यालय आवश्यक रूप से रखें तथा उनके वाहन चालकों तथा मालिक के चरित्र सत्यापन तथा वाहन दस्तावेजों की जांच के लिए आवश्यक दस्तावेज अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी तथा जिला पुलिस मंदसौर को उपलब्ध करवाए।

बैठक में विभिन्न विद्यालय से नामित प्रतिनिधीकरण तथा सीएसपी सतनाम सिंह, यातायात प्रभारी मनोज कुमार सोलंकी, सूबेदार शैलेंद्र सिंह चौहान, अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी वीरेंद्र यादव, जिला शिक्षा अधिकारी लोकेंद्र डाबी, प्लानिंग अधिकारी दिलीप मुजावदिया, एनसीसी अधिकारी विजय सिंह पुरावत, जितेंद्र कनौजिया उपस्थित रहे।

बस की टक्कर से महिला की मौत

नीमच, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। जावद तहसील में बस की टक्कर से बुजुर्ग महिला की मौत हो गई। दुर्घटना के बाद महिला को 108 वाहन से बड़े अस्पताल लाए।

मिली जानकारी अनुसार जावद तहसील में कनेरा से निंबाहेड़ा के बीच चलने वाली शक्तावत बस ने गुटलाई चौराहे पर मांगीबाई पति कवंरलाल निवासी केनपुरिया को टक्कर मार दी। दुर्घटना में घायल महिला को 108 एम्बुलेंस से बड़े अस्पताल लाए। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। दुर्घटना के बाद मौके से बस ड्राइवर फरार हो गया। बताया जा रहा है कि दुर्घटना के बाद जब मौके पर भीड एकत्र हुई तो ड्राइवर भाग गया। मंगलवार दोपहर बाद दुर्घटना हुई। महिला को देर शाम बड़े अस्पताल लाए। बुधवार सुबह पोस्टमार्टम कर शव परिजना के सुपूर्द किया गया था। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू की।

लक्ष्मी पूजन को लेकर असमंजस

इस बार छह दिवसीय होगा दीपावली पर्व

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। इस बार दीपावली के पंच दिवसीय पर्व को लेकर लोगों में असमंजस हैं। इस पर्व की शुरुआत धन तेरस से होती है। लेकिन, इस बार तिथियों में हेरफेर के कारण दीपावली का पर्व 6 दिन तक मनाया जाएगा। 29 अक्टूबर से इसकी शुरुआत होगी जो 3 नवंबर को भाई दूज के साथ समाप्त होगा। ज्योतिषाचार्यो के अनुसार कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि से इस पंच दिवसीय पर्व की शुरुआत होती है। पहले दिन धन की देवी माता लक्ष्मी की पूजा होती है। इस दिन भगवान धन्वंतरि के पूजन का भी विधान है। 30 अक्टूबर को यम चतुर्दशी धनतेरस के अगले दिन चतुर्दशी तिथि को यम चतुर्दशी कहा जाता है। इस दिन यम के नाम का दीपक जलाया जाता है।

31 अक्टूबर को मनाई जाएगी दीपावली...

ज्योतिषाचार्यों के अनुसार 1 नवबंर को अमावस्या तिथि प्रदोष और निशिता काल को स्पर्श नहीं कर रही है। जबकि, 31 अक्टूबर को अमावस्या तिथि प्रदोष काल से लेकर निशिता काल तक व्याप्त रहेगी। साथ ही 1 नवंबर को आयुष्मान योग और स्वाति नक्षत्र का संयोग भी बन रहा है। लेकिन, तिथियों के अनुसार इस बार 31 अक्टूबर को ही दीपावली मनाना ज्यादा शुभ रहेगा।

गोवर्धन पूजा 2 को, 3 नवंबर को भाईदूज...

वैसे तो दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। लेकिन, तिथियों में हेरफेर के कारण गोवर्धन पूजा 2 नवंबर को की जाएगी, इसके बाद 3 नवंबर को भाई दूज का त्यौहार मनाया जाएगा।

यह रहेंगे शुभ मुहूर्त...

इस बार दीपावली पर पूजन के लिए दो मुहूर्त मिलेंगे। पहला शुभ मुहूर्त प्रदोष काल में है। इस दिन प्रदोष काल शाम 5 बजकर 36 मिनीट से रात्रि 8 बजकर 11 मिनट के बीच रहेगा, जिसमें वृषभ काल शाम 6 बजकर 20 मिनट से लेकर रात 8 बजकर 15 मिनट तक रहेगा। इसमें भी मां लक्ष्मी का पूजन किया जा सकता है।

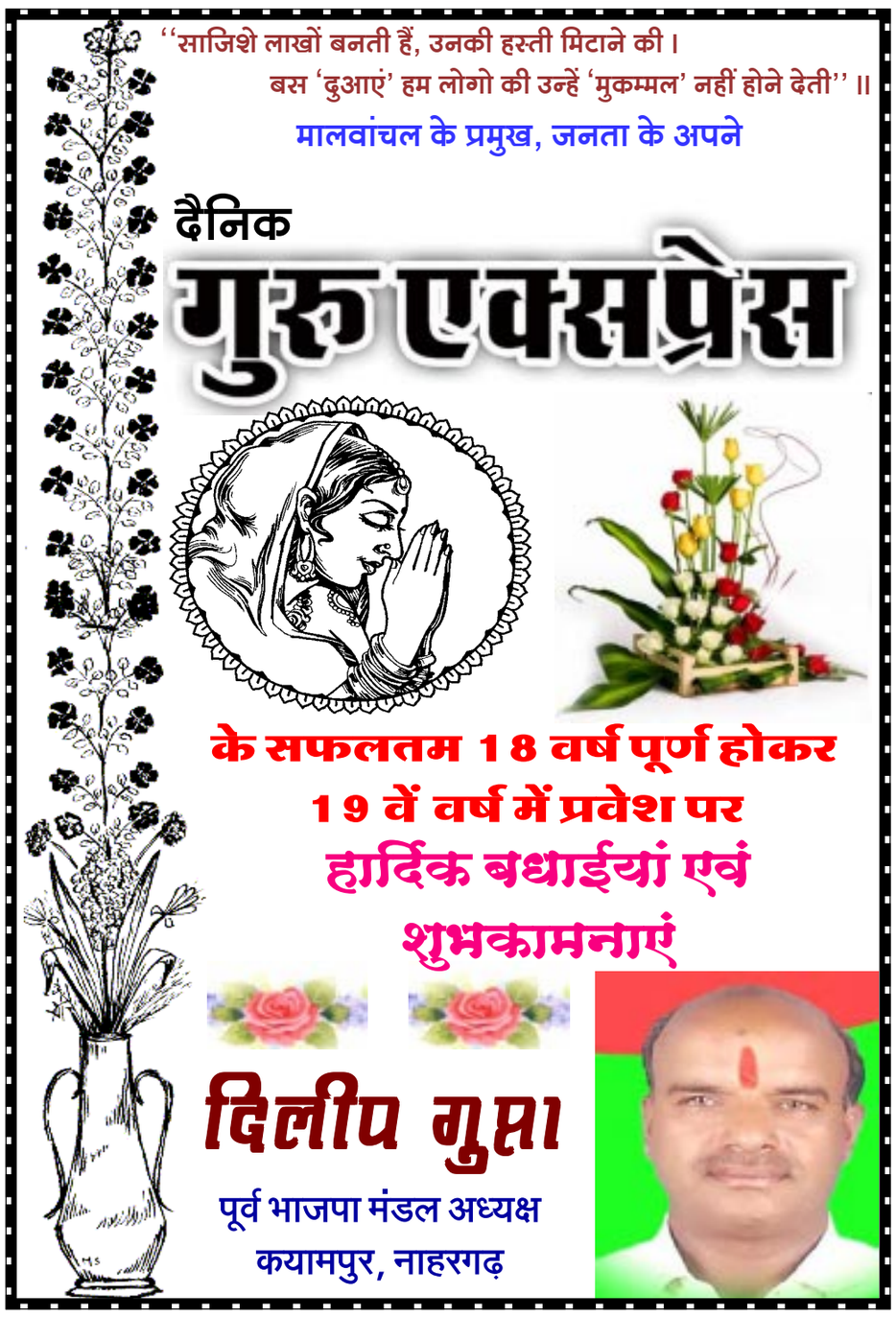

विचार-मंथन

आलोचना का अर्थ निंदा करना नहीं...

सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी पत्रकारिता कर रहे लोगों के लिए सुकूनदेह हो सकती है कि सरकार की आलोचना करना पत्रकारों का अधिकार है। हालांकि देखने की बात है कि सरकारें इस बात को कहां तक स्वीकार कर पाती हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने यह टिप्पणी उत्तर प्रदेश के एक पत्रकार के खिलाफ दायर मुकदमे की सुनवाई करते हुए की। इस संबंध में अदालत ने संविधान के अभिव्यक्ति की आजादी से जुड़े अनुच्छेद की याद भी दिलाई और पत्रकार को गिरफ्तारी से संरक्षण प्रदान कर दिया। दरअसल, सरकारों को अपनी आलोचना कभी रास नहीं आती, मगर पिछले कुछ वर्षों में सरकारें इसे लेकर प्रकट रूप में सख्त नजर आने लगी हैं। सरकार के खिलाफ अखबारों में खबरें, लेख या कोई वैचारिक टिप्पणी करने पर कई पत्रकारों को प्रताड़ित करने की घटनाएं देखी गई हैं। यहां तक कि कुछ पत्रकारों पर गैरकानूनी गतिविधि निवारण अधिनियम के तहत भी मुकदमे दर्ज किए गए, जिसमें जमानत मिलनी मुश्किल होती है। इस धारा के तहत कई पत्रकार अब भी सलाखों के पीछे हैं। कुछ मामलों में पहले भी सर्वोच्च न्यायालय कह चुका है कि सरकार की आलोचना देशद्रोह नहीं माना जा सकता। मगर किसी सरकार ने उसे गंभीरता से नहीं लिया। कुछ राज्यों में ऐसे भी उदाहरण हैं, जब सरकार की किसी नीति या फैसले की आलोचना करने पर पत्रकारों को पकड़ कर थाने में बंद किया गया और उनके साथ मारपीट की गई। दरअसल, इस तरह की कोशिशें सच्चाई को सामने लाने से रोकने के लिए की जाती हैं। जबकि स्वस्थ लोकतंत्र का तकाजा है कि पत्रकारीय आलोचना को प्रोत्साहित किया जाए। इससे सरकारों को अपनी नीतियों के निर्धारण, योजनाओं के संचालन आदि में सुधार करने का अवसर मिलता है। आलोचना को रोक कर गलत नीतियों को चलाते रहना एक तरह से लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बाधित करने का प्रयास ही होता है। हालांकि आलोचना का अर्थ हर समय निंदा करना नहीं होता। किसी भी मुद्दे के पक्ष और विपक्ष का तार्किक विश्लेषण करना होता है। पत्रकारिता यही करती है। वह लोकहित में सरकार को कदम उठाने का रास्ता सुझाती रहती है, इसीलिए उसकी विश्वसनीयता होती है। मगर सरकारें जब उसके मूल स्वभाव को ही बदलने का प्रयास करती हैं, तो उसकी विश्वसनीयता पर प्रहार करती हैं। ऐसे में पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ न होकर प्रचारतंत्र में तब्दील होने लगती है। किसी देश की पत्रकारिता कितनी स्वतंत्र है और कितने साहस के साथ अपने सत्ता प्रतिष्ठान की आलोचना कर पा रही है, इससे उस देश की खुशहाली का भी पता चलता है। यह अकारण नहीं है कि पिछले कुछ वर्षों में विश्व खुशहाली सूचकांक में भारत निरंतर नीचे खिसकता गया है। इसलिए कि खुशहाली नापने के पैमाने में एक बिंदु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भी होता है। इसे विडंबना ही कहेंगे कि कोई देश अपनी आर्थिक तरक्की का तूमार तो खूब बांध ले, पर खुशहाली के मानकों पर गरीब कहे जाने वाले देशों से भी पीछे नजर आए। पत्रकारिता आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों को दूर करने में मदद करती है। उसका लाभ उठाने के बजाय अगर उसका गला घोंटने का प्रयास होगा, तो सही अर्थों में विकास का दावा नहीं किया जा सकता। अगर कोई सरकार सचमुच उदारवादी और लोकतांत्रिक होगी, तो वह आलोचना से कुछ सीखने का प्रयास करेगी।

पशु भी चाहते हैं आजादी और प्रेमपूर्ण व्यवहार

चेतनादित्य आलोक

दरअसल, देश भर में जंगलों की तेजी से कटाई के कारण वन्य पशुओं का आशियाना दिनोंदिन उजड़ता जा रहा है। आज विश्व की कुल जनसंख्या 08 अरब (08 अरब साढ़े 17 करोड़) से भी अधिक हो चुकी है और प्रत्येक वर्ष इससे दो गुना से भी ज्यादा लगभग 18 अरब तक वृक्षों की कटाई हो रही है। बढ़ती जनसंख्या और घटती वन-संपदा ने जिन कुछ प्रमुख समस्याओं को जन्म दिया या बढ़ाया है, उनमें सर्वाधिक चिंतनीय और घातक समस्या वन्य पशुओं का लगातार बढ़ता हुआ आतंक है। उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती जिले बहराइच का प्रकरण सामने है, जहां मार्च 2024 में शुरू हुए भेड़ियों के खूनी हमलों के सर्वाधिक शिकार इलाके के छोटे-छोटे बच्चे हुए। इन हमलों में अब तक लगभग 10 बच्चों समेत कम-से-कम एक दर्जन लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 40 से अधिक लोग घायल हुए हैं। दुर्भाग्य से घायलों में भी अधिकतर बच्चे ही हैं। वैसे देखा जाए तो भेड़िए ही नहीं, बल्कि हाथी, शेर, सियार, तेंदुआ, चीता, भेड़िया, भालू और बाघ जैसे बेहद खूंखार और भयावह वन्य पशुओं का मानव बस्तियों में अतिक्रमण और उनके द्वारा मनुष्यों, विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं पर हमले किए जाने की घटनाएं दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही हैं। गौरतलब है कि महाराष्ट्र में बाघों, भालुओं, तेंदुओं और जंगली हाथियों, मध्य प्रदेश में सियारों एवं पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में जंगली हाथियों के हमले मनुष्यों कोई नई बात नहीं है। निर्विवाद रूप से ये घटनाएं अत्यंत दुरूखद और भयावह हैं। इसलिए लोगों का आक्रोशित होना उचित है, लेकिन प्रश्न है कि आखिर जंगल में आजाद विचरण करने, छोटे वन्य पशुओं का शिकार कर अपना तथा परिवार का भरण-पोषण करने और सामान्यतः अपने परिवार के साथ जीवन यापन करने वाले ये भेड़िए इतने खूंखार क्यों हो गए कि हमारे छोटे-छोटे मासूम बच्चों को मारकर खाने लगे। दरअसल, देश भर में जंगलों की तेजी से कटाई के कारण वन्य पशुओं का आशियाना दिनोंदिन उजड़ता जा रहा है। आज विश्व की कुल जनसंख्या 08 अरब (08 अरब साढ़े 17 करोड़) से भी अधिक हो चुकी है और प्रत्येक वर्ष इससे दो गुना से भी ज्यादा लगभग 18 अरब तक वृक्षों की कटाई हो रही है। पेड़ों की इस अंधाधुंध कटाई की भरपाई किए जाने का एक ही तरीका हो सकता है और वह है तीव्र गति से नए पौधों का रोपण और उनकी देखभाल करना यानी जितने पेड़ प्रत्येक वर्ष काटे जा रहे हैं, कम-से-कम उतने पौधे भी दुनिया भर में लगाए जाएं। हालांकि उन पौधों के पेड़ बनने में कई वर्ष लग जाते हैं। इसलिए वास्तव में पौधरोपण की जो वर्तमान दर और गति है, उससे लगातार नष्ट किए जा रहे जंगलों के एवज में नए जंगल उगा पाना संभव नहीं है। तात्पर्य यह कि पौधरोपण वन्य पशुओं के प्राकृतिक रहवास और पर्यावरण दोनों को बचाने का सर्वश्रेष्ठ विकल्प तो अवश्य है, किंतु इस कार्य में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करने के लिए पौधरोपण की गति को हमें इस हद तक बढ़ाना होगा कि जितने वृक्ष प्रत्येक वर्ष दुनिया भर में काटे जाते हैं, कम-से-कम उससे डेढ़ गुना तक पौधे तो अवश्य ही लगाए जाएं, जबकि प्रत्येक वर्ष 18 अरब काटे जाने वाले वृक्षों की तुलना में आज दुनिया भर में मात्र पांच अरब पौधे ही लगाए जा रहे हैं। जाहिर है कि इस प्रकार पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की भरपाई संभव नहीं होगी। यह विडंबना ही है कि भारत में भी वृक्षों की अंधाधुंध कटाई जारी है। लोकसभा में एक सवाल के जवाब में केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने 21 मार्च 2022 को बताया था कि वर्ष 2020-21 के दौरान भारत में सार्वजनिक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के निर्माण और विकास के लिए लगभग 31 लाख पेड़ काट दिए गए। वन (संरक्षण) अधिनियम के अंतर्गत काटे गए पेड़ों के बदले में प्रतिपूरक वनीकरण की योजना चलाकर मोदी सरकार ने 359 करोड़ रुपये की लागत से 3.6 करोड़ से अधिक पौधे लगाए, जो नाकाफी प्रतीत होते हैं, क्योंकि फिलहाल इससे संबंधित कोई आंकड़ा उपलब्ध नहीं है कि उनमें से कितने पौधे बचाए गए और कितने नष्ट होने के लिए छोड़ दिए गए। बहरहाल, वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण दिनोंदिन वन्य पशुओं का प्राकृतिक रहवास सिकुड़ता जा रहा है, इससे इनके लिए भोजन-पानी की बहुत बड़ी समस्या पैदा हो गई है। इसीलिए वन्य पशु भोजन-पानी की तलाश में मानव बस्तियों की ओर पलायन करने के लिए मजबूर हुए हैं। वैसे भेड़ियों की बात करें तो ये स्वभाव से खूंखार तो होते हैं, परंतु सारे भेड़िए आदमखोर नहीं होते। हालांकि प्रतिशोध लेने में ये अत्यंत माहिर होते हैं। इसलिए यदि इनको या इनके परिवार के सदस्यों को क्षति पहुंचाने का प्रयास किया जाए तो ये कतई सहन नहीं करते और अपने शत्रुओं से चुन-चुनकर बदला लेते हैं। ऐसे कुछ उदाहरण दुनिया में मौजूद हैं, जिनमें भेड़ियों अथवा उनके बच्चों को मनुष्यों के द्वारा क्षति पहुंचाए जाने के बाद ये खूंखार हो गए और जब तक अपना बदला पूरा नहीं कर लिया, तब तक इनकी आक्रामकता कम नहीं हुई। आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व ऐसी ही एक घटना उत्तर प्रदेश के जौनपुर और प्रतापगढ़ जिलों में सई नदी के कछार पर घटी थी, जिसमें भेड़ियों के हमलों में इलाके के 50 से भी अधिक मासूम बच्चों की मौत हो गई थी। उस समय पड़ताल करने पर यह पता चला था कि कुछ इंसानी बच्चों ने भेड़ियों की एक मांद में घुसकर उनके दो बच्चों को मार डाला था, जिसके प्रतिशोध स्वरूप भेड़ियों ने जोरदार हमले कर मनुष्यों के 50 से भी अधिक मासूम बच्चों को मौत के घाट उतार दिया था। उस दौरान वन विभाग के द्वारा चलाए गए भेड़ियों के धर-पकड़ अभियान में कुछ भेड़िए पकड़े भी गए थे, लेकिन उनके बीच में मौजूद आदमखोर जोड़ा हमेशा बचता रहा और बदला लेने के मिशन में लगातार कामयाब भी होता गया। हालांकि बाद में आदमखोर भेड़ियों को वन विभाग के कर्मचारियों द्वारा गोली मार दी गई और अंततः भेड़ियों का खूनी आतंक खत्म हो पाया था। गौर करें तो इस बार भी बहराइच की घटनाओं में भेड़ियों का वही व्यवहार... वही पैटर्न सफल होता हुआ प्रतीत हो रहा है। सबसे बड़े दुरूख की बात तो यह है कि एक बार फिर इन भेड़ियों की जान खतरे में आ गई है, क्योंकि शासन-प्रशासन की ओर से बेकाबू हो चुके इन आदमखोर भेड़ियों को गोली मार देने का आदेश दे दिया गया है। वैसे भेड़ियों के विरुद्ध की जाने वाली सरकारी कार्रवाइयों पर गौर करें तो उनके जीवन का सर्वाधिक स्याह पक्ष अंग्रेजों के समय का है।

शिक्षा का मूल उद्देश्य जागृति है...

राजेंद्र जोशी

सबके लिए शिक्षा का नारा 1986 में दिया गया और अब नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने को है। यह नारा नया नहीं है। भारत के संविधान में सबको शिक्षा सुलभ हो, सभी शिक्षित हों, यह बात अच्छी तरह लिखी गई है। शिक्षा का सार्वजनिकीकरण हो, शिक्षा सबको मिले। मगर इन सबका उद्देश्य क्या हो? क्या शिक्षा से लोगों में पढ़ने-लिखने की क्षमता आएगी? या उनमें कोई अपनी शक्ति जागृत होगी, जिससे वे अपने-आप को कमजोर महसूस न करें और दूसरों पर निर्भर महसूस करने के बजाय खुद अपनी शक्ति जागृत कर सकें? शिक्षा का मूल उद्देश्य जागृति है। शिक्षा उस शक्ति को जगाती है, गुणों को अर्जित करती है, विकसित करती है। शिक्षा कोई नई बात लाने के बजाय व्यक्ति में निहित शक्तियों का ही विकास करती है, लेकिन विकास कितना होगा, यह नई शिक्षा नीति की शिक्षा-पद्धति पर निर्भर है। हम जब शिक्षित होने की बात करते हैं तो किसान पूछता है कि इससे मुझे क्या लाभ होगा! महिला पूछती है कि इससे मुझे क्या लाभ होने वाला है! जो खेती करना जानते हैं, उनको रोज की आमद हो जाती है, वे भी रोटी, कपड़ा और मकान किसी तरह जुटा लेते हैं। फिर पढ़ने-लिखने से उन्हें कोई खास फायदा होगा, शिक्षा उनको नई जानकारी देगी और उससे उनको नई चीज मिलेगी, नई रोशनी मिलेगी, हम ऐसे सवालों का जवाब हां में नहीं दे पाते। हम केवल यही कहते हैं कि पढ़ने-लिखने से अंधकार मिटेगा, हम कुछ पढ़-लिख पाएंगे तो पहले से बेहतर हो जाएंगे। 'क-ख-ग' या किताब के कुछ अक्षर पढ़ने से कोई पहले से बेहतर हो जाएगा यह समझ में अभी तक नहीं आया।शिक्षा जब तक किसी की सोई हुई शक्ति को नहीं जगाएगी, तब तक उसमें शक्ति और गुणों का विकास नहीं होगा, वह शिक्षा नहीं कहला सकती। उसे अक्षर ज्ञान तो हो जाता है, पर वह क्या पढ़े, यह तय करना संभव नहीं है। अपनी समस्याओं का विश्लेषण कैसे करें, उसका हल कैसे खोजें और कैसे सामूहिक रूप से हल करें- शिक्षा जब तक इन बातों पर चर्चा नहीं करेगी, जब तक लोगों को सामूहिक रूप से रहना नहीं सिखाएगी और सामूहिक रहकर अपनी ताकत को जागृत करने का लक्ष्य नहीं बनाएगी, तब तक आगे बढ़ना संभव नहीं है। लोकशिक्षा अपने आप में बहुत व्यापक है। लोकशिक्षा जागृति के लिए हो। लोकशिक्षा से लोकशक्ति का प्रादुर्भाव होना आवश्यक है। लोकशिक्षा के लिए सबको इकट्ठा होना होगा, इसके लिए हमें सबको जागृत करना होगा और साक्षरता अभियान में जागृति लाई जाए, यह आवश्यक है। लोकशक्ति जगाई जाए, यह अत्यंत आवश्यक है। साक्षरता अभियान की बात करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक होगा कि साक्षरता आखिर है क्या? साक्षरता का अर्थ है समाज के वे लोग, जो लिखना-पढ़ना नहीं जानते और अक्षरों के आलोक से दूर हैं, उन्हें साक्षर बनाना। जिसे औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने का अवसर नहीं मिला, वह वास्तव में संसार के अनुभवों से सजा व्यक्ति है। साक्षरता समाज को समझने की नई दृष्टि देती है, समस्याओं को समझने के लिए मार्गदर्शन करती है। यह एक सार्थक कर्तव्य है, जिससे हम भावों को सही ढंग से व्यक्त कर सकते हैं, लेकिन अगर कोई असाक्षर शिक्षा से जुड़ जाए तो उसकी समझदारी में कुछ अपनापन अवश्य आएगा। आज की तेजी से भागने वाली दुनिया में वह औपचारिक शिक्षा के अभाव में कागजों के संसार में सहारा नहीं है। वह किसी और के और अंगूठे के पोरे से भी कुछ बाहर निकल सकेगा। साक्षरता केवल अक्षरों और अंकों का खेल नहीं है। कई मार्ग इसमें एक साथ खुलते हैं। सामाजिक और भावनात्मक एकता, सांप्रदायिक सद्भाव, छोटे परिवार की अवधारणा, पर्यावरण की सुरक्षा और महिलाओं की समानता- सब इसी के हिस्से है। अक्षरों का संसार आलोक का संसार है। आलोक जब फैलता है तो किसी भी कोने में अंधकार नहीं रह सकेगा। अतीत में झांकें मार्च, 1990 कोई ज्यादा दूर नहीं लगता। थाईलैंड की जोमेटिन नामक संस्था ने एक विश्व सम्मेलन का आयोजन किया था, जिसका विषय क्षेत्र काफी व्यापक था। शिशुओं के लिए पूर्व प्राथमिक, बालक-बालिकाओं के लिए प्राथमिक युवा, प्रौढ़ों के लिए साक्षरता और कौशल का प्रशिक्षण आदि अनेक बातें एक ही मंच पर कही-सुनी और सोची गई। जहां विकास की पहली शर्त शिक्षा है, शिक्षा के क्षेत्र में जो कुछ भी खर्च होता है वह मानव पर खर्च होता है। एक कारखाने में मशीन लगाते हैं, उससे जो उत्पादन होता है, वह हमारे काम आता है।

कितना प्रभावी सोशल मीडिया का झुनझुना

चारों तरफ छाया हुआ है सोशल मीडिया। सोशल मीडिया के काल में या फिर इसके जंजाल में हर कोई व्यस्त है, मस्त है और सोशल मीडिया के परिवार में चार चाँद लगा रहा है। इतनी सक्रियता जिंदगी में नहीं होगी, जितनी सक्रियता सोशल मीडिया पर है! छोटी उम्र के बच्चों से लेकर बड़ी उम्र के बूढ़ों तक सब सोशल मीडिया पर चहल कदमी कर रहे हैं। सुबह सोशल मीडिया से ,रात सोशल मीडिया से। सारे जमाने की खबरें,प्रपंच की सारी बारात सोशल मीडिया पर चलती है। हर कोई यहाँ नायक /नायिका हैं । अपनी छोटी सी बात से लेकर बड़ी बातों का पूरा प्रचार- प्रसार तंत्र फैलाया हुआ है। जुकरबर्ग ने जगह दी है तो उस जगह का भरपूर इस्तेमाल हो रहा है। एक मामूली सी बात को फैला- फैला कर विशालकाय बनाने का पूरा यत्न /प्रयत्न हो रहा है। बंदर के हाथ में जैसे उस्तरा आ गया! हर कोई अपने आप को तीरंदाज समझ रहा है और नए-नए तीर निकाल- निकाल कर यहाँ पेश कर रहा है। मामूली सी बातों की इतनी बड़ी-बड़ी कहानी ! आखिर जगह मिली है तो अपने दिमाग की सारी कलाबाजियाँ यहां दिखा दी जाएँ, भले ही फिर लोग लानत-मलामत भेजें! छोटे-छोटे बच्चे इतने एक्सपर्ट एक्टर्स हो चुके हैं। रील बना -बनाकर एक्टिंग कर रहे हैं बड़ों - बड़ों की! पढ़ाई- बढ़ाई एक तरफ, रील का पैशन- इमोशन एक तरफ। इनफ्लुएंसर तमाम हथकंडे अपना रहे हैं और अशुद्ध लिख -लिख कर, उल्टा सीधा कंटेंट परोस कर , कचरा -कूड़ा बिखेर कर दिमाग में सभी के भर-भर लाइक- कमेंट्स पा रहे हैं। आखिर इन्हें कोई प्रशिक्षण तो मिला नहीं है और न ही कुछ उत्कृष्ट पठन-पाठन या लर्निंग है। टीनएजर्स अपनी बुद्धि ताक पर रखकर रील पर रील देखे जा रहे हैं। अपना समय / ऊर्जा जाने क्या सीखने में व्यर्थ कर रहे हैं! आखिर स्तरहीनता की पराकाष्ठा देखना हो तो यहाँ देखी जा सकती है आजकल सर चढ़कर बोल रहा है यह बुखार। हर कोई सोशल मीडिया का बीमार बना हुआ है। कोई विवेक, तर्क ,बुद्धि यहाँ काम नहीं कर रही सब एक ही धारा में बहे जा रहे हैं। गर्द उड़ रही है और सबको लपेटे ले रही है। सोशल मीडिया के प्रभाव को और प्रभावी बनाने के लिए बहुत सारे स्क्रीन हीरोज यहाँ उत्पन्न हो चुके हैं ।कई सारे इन्फ्लुएंस है। किस तरह छोटी सी बात को यानी तिल के ताड़ को पहाड़ बनाना है ,इसकी ट्रेनिंग ली जा रही है, दी जा रही है। सोशल मीडिया कितना प्रभावी है ।हकीकत में उसकी कहानी क्या है -यह तो पर्दे के पीछे वाला ही जाने लेकिन प्रपंच और बातों के , दिखावे के परचम लहरा लहरा कर फेक हीरोज बहुत इतरा रहे हैं। जो कमअक्ल हैं,नादान वय में हैं ,अवयस्क है छोटे हैं, मासूम है ,उनको बरगला रहे हैं। ऐसे-ऐसे श्रेष्ठ विचारों का चौतरफा हमला हो रहा है अच्छे-अच्छे का बेड़ा गर्क हो जाए , फिसल जाए, गिर जाए ,भटक जाए ,कुचक्रों में फँस जाए। बुनियादी रूप से हिले हुए, आधारहीन लोगों के द्वारा यह जो तंत्र बिछाया गया है उसमें कौन न हिल जाए ! सब हिले हुए हैं! सब की धरातल खिसकी हुई है। सब आसमान में टँगे हुए। समझ ही नहीं आता कि किसे देखें, किसे न देखें । किसे सुने ,किसे न सुनें !क्या पढ़े ,क्या न पढ़े। आँखों पर तो जैसे सोशल मीडिया का एक लुभावना चश्मा चढ़ा हुआ है। उसमें हर तस्वीर रंगीन नज़र आ रही है और मासूम नादान वय के बच्चों, टीनएजर बच्चों का तो बहुत ही अधिक हाल -बेहाल है। एंड्रॉयड फोन का ही सवाल है । एंड्रॉयड फोन की इन्हें जरूरत ही क्या है! इन्हें साधारण कॉलिंग वाले फोन से ही मतलब होना चाहिए। जब तक ब्रह्मचर्य है, स्कूल है, पढ़ाई है, खेलकूद है ,तब तक इन सब और बातों की क्या जरूरत है इतनी मशक्कत क्यों करना है।

कॉलेज मैदान में आयोजित होगा भव्य दशहरा उत्सव

तैयारियों का जायजा लेने कलेक्टर-एसपी ने समिति के साथ किया स्थल निरीक्षण, सामूहिक रूप से होगा हनुमान चालीसा का पाठ, मन्दसौर बनाएगा ऐतिहासिक रिकार्ड

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। दशपुर सांस्कृतिक उत्सव समिति के तत्वावधान में आगामी 12 अक्टूबर विजयादशमी पर्व पर कॉलेज मैदान में भव्य दशहरा उत्सव आयोजित किया जा रहा है। जिसकी पूर्व तैयारी का वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों ने आयोजन समिति के साथ अवलोकन और स्थल निरीक्षण किया।

कलेक्टर श्रीमती अदिति गर्ग और जिला पुलिस अधीक्षक अभिषेक आनंद प्रशासनिक अमले के साथ बुधवार को कॉलेज ग्राउंड पहुंचे और आयोजन समिति के पदाधिकारी से दशहरा उत्सव के संदर्भ में विस्तृत जानकारी प्राप्त की और नगर में सर्वाधिक भव्य उत्सव जिसमें लगभग 50 हजार लोग एकत्र होते हैं इस दौरान समुचित व्यवस्थाएं निर्धारित रहे इस बात पर विचार विमर्श किया गया दशपुर सांस्कृतिक उत्सव समिति के अध्यक्ष डॉ. भानु प्रताप सिंह सिसोदिया ने अवगत कराया कि कॉलेज ग्राउंड में 75 फीट उंचे रावण के पुतले का दहन किया जाएगा साथ ही 41-41 फीट उंचे मेघनाथ और कुंभकरण के भी पुतले जलाए जाएंगे इसके पूर्व आतिशबाजी के भी नजारे पेश होंगे। हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ किया जाएगा और मन्दसौर बनाएगा ऐतिहासिक रिकार्ड। बचों व युवाओं से हनुमान बनकर आने का भी आह्वान किया गया है।

कलेक्टर अदिति गर्ग ने तैयारी का जायजा लेते हुए अधीनस्थ अधिकारियों को समुचित दिशा निर्देश दिए और सुरक्षा व्यवस्था तथा अन्य सभी सुविधाएं आम जनों को यहां मिले इस बात पर जोर दिया। जिला पुलिस अधीक्षक अभिषेक आनंद ने पार्किंग और आने-जाने के रास्तों के बारे में जानकारी लेकर व्यवस्था संबंधी निर्देश दिए। एडीएम एकता जायसवाल, एडिशनल एसपी गौतम सिंह सोलंकी, एसडीएम शिवलाल शाक्य, सीएसपी सतनाम सिंह, लोकनिर्माण विभाग के मुख्य कार्य पालन अधिकारी आदित्य सोनी सीएमओ नपा सुधीर कुमार सिंह,विद्युत मंडल के शहर अभियंता पीयूष पंवार तहसीलदार रमेश मासरे वाय डी नगर थाना टीआई संदीप मौर्य, शहर थाना कोतवाली भूपेंद्र सिंह राठौड़, यातायात निरीक्षक शैलेंद्र सिंह चौहान,आदि भी उपस्थित थे जिन्हें कलेक्टर ,एसपी ने व्यवस्था संबंधी आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान यहां दशपुर सांस्कृतिक उत्सव समिति से जुड़े सर्वश्री ब्रजेश जोशी, पूर्व अध्यक्ष संजय वर्मा, मुकेश काला, राजेश पाठक, चेतन जोशी ,दिनेश नागर,आशीष गौड़ ,नरेंद्र त्रिवेदी, प्रदीप सोनी, बिल्लू अग्रवाल, प्रहलाद डगवार, विक्रम सम्राट विनोद डगवार, पंकज सेठिया , निरांत बग्गा , भूपेंद्र सोनी ,दिनेश जाट ,पुरषोत्तम इंदोरा ,पवन हिंगोरिया ,सुनील योगी ,रविंद्र जादोन ,विकास बड़गोती, आशीष भाटिया , गणेश फगवार,आशीष पालीवाल , शुभम सारस्वत सहित बड़ी संख्या में सदस्यगण मोजूद थे।

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5382

	9	6		4			3	
	5	7	8	2				
1			9			5		
		9		1				8
5								2
4				9		6		
		4			3			1
				7	9	2	6	
	2			5		9	8	

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5381

2	3	5	6	4	7	9	8	1
1	8	9	5	3	2	4	7	6
7	4	6	8	9	1	2	5	3
4	5	1	9	7	8	3	6	2
3	6	8	1	2	5	7	9	4
9	7	2	3	6	4	5	1	8
6	9	7	4	1	3	8	2	5
8	1	3	2	5	9	6	4	7
5	2	4	7	8	6	1	3	9

वर्ग पहेली 5382

संकेत: बाएं से दाएं
1. इंदौर नगर के इतिहास में प्रथम समाचार पत्र होने का गौरव इस अखबार को है जो साप्ताहिक था उसका प्रथम अंक 6 मार्च 1849 को प्रकाशित हुआ था (7)
6. कंठ, गले की नली (3)
7. जगत, संसार, दुनिया, जग (2)
9. गोद, अंक,क्रोड, कगार (3)
11. कनक, धातु, स्वर्ण (2)
12. आवेश, उन्माद (3)
13. यह बांग्लादेश में बूढ़ी गंगा के तट पर देश का सबसे बड़ा शहर है (2)
15. असम के पहाड़ी क्षेत्र में स्थित जंगल जाति, अनुपस्थिति, गैर हाजिरी (2)
16. जिसके पांच मुख हों, पंचमुखी (4)
18. पक्षी, नभचारी, गगनचर (2)
19. हिंदी साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई शब्द दो या दो से अधिक बार आए और प्रत्येक बार उसके भिन्न अर्थ हों (3)
20. गज, कुंजर, मातंग (2)
21. श्रृंगार, सजावट, शोभा, श्री (3)

ऊपर से नीचे(2)
1. मास, महीना, तीस दिनों का समय (2)
2. तीव्र अभिलाषित होना, उत्कंठित होना (4)
3. वाक्य का अवयव (2)
4. पश्चिमी निमाड़ का प्रसिद्ध जिला (4)
5. भास्कर, दिनपति, दिवाकर, सूरज (2)
8. सांस लेने छोड़ने की एक यौगिक क्रिया (3)
9. निर्देशक मोहनकुमार की राजेंद्र कुमार वैजयंती माला अभिनीत 1961 की एक हिट फिल्म (5)
10. वह राजा जिसके नाम से कोई संवत चले महान, श्रेष्ठ (2)
11. गुजरात में द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक जो पश्चिमी तट पर प्रभास क्षेत्र में स्थित है (4)
14. लोकमत, जनता की राय (4)
17. मधु, शहद, अंग्र (3)
18. पथिक, अनुगामी, यात्री, राहगीर (2)

वर्ग पहेली 5381 का हल

गु	ल	जा	री	ला	ल	न	या
ल		फा	ना		गा		ता
फा	गु	न		आ	ना		
म	म		म		बू	झा	म
	ता	ज	द		झा		ह
या	ह		र		गा	या	क
प		आ	सा	र		र	
सा	ह	ज			म	सी	म

संभाग बनाओ आंदोलन में चल रहे पोस्टकार्ड अभियान में नागरिकों का दिख रहा है अपार उत्साह

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। संभाग बनाओ आंदोलन के अंतर्गत गांधी चौराहा पर प्रतिदिन चल रहे पोस्टकार्ड अभियान में बुधवार को आठवें दिवस दशपुर योग शिक्षा संस्थान, सीए एसोसिएशन, जिला इंटक संगठन और प्रजापति समाज के प्रतिनिधियों ने सहभागिता निभाई और मुख्यमंत्री के नाम मंदसौर को संभाग बनाने की मांग का पोस्टकार्ड लिखा और आम जनों से भी पोस्टकार्ड अभियान में शामिल होने का आह्वान किया।

इस अवसर पर दशपुर योग शिक्षा संस्थान के संस्थापक योग गुरु सुरेंद्र जैन ने कहा कि मंदसौर को संभाग बनाने की मांग मे जन जन की भावनाएं निहित है। निश्चित रूप से विकास की दौड में काफी पिछडे हुए इस क्षेत्र को संभाग बनाने से विकास के व्यापक सोपान प्राप्त होंगे और युवा पीढी और क्षेत्र के व्यावसायिक वर्ग को भी इसका लाभ मिलेगा। इंटक संगठन के श्री गोपाल गुरु ने कहा कि मंदसौर को संभाग बनाने की जनता की मांग समय की मांग है मध्य प्रदेश शासन को मंदसौर क्षेत्र की जनता की भावना को आत्मसात करते हुए इस क्षेत्र के चहुंमुखी विकास हेतु मंदसौर को संभाग बनाना चाहिए। सीए एसोसिएशन के अध्यक्ष दिनेश जैन ने कहा कि मंदसौर के संभाग बनने से संपूर्ण जिले और अंचल में अनेक नई सुविधा और अवसर बढ़ेंगे जिनका लाभ सभी को प्राप्त होगा, मंदसौर को संभाग बनाने की मांग को हम सभी को पूरा समर्थन देना चाहिए। आठवें दिवस पोस्टकार्ड अभियान में सम्मिलित होने वालों में दशपुर योग शिक्षा संस्थान के संस्थापक योग गुरु सुरेंद्र जैन, लोकेंद्र जैन, जितेश फरक्या, सुभाष बग्गा, प्रीति जैन, विजय पलोड, प्रेमेंद्र चौरडिया, सुभाष पाटीदार, राजेंद्र चाष्ठ, महेश सिसोदिया, महेश सेठिया, कैलाश रिछावरा, ललित जैन ,कृष्ण मंडलोई, शांकी कश्यप, प्रियंका मिंडा, विष्णु डाबर ,लालू प्रसाद चंसोरिया, गोपाल पलोड ,हिम्मत सिंह सांखला अशोक कुदार ,सुरेश पारीक तथा सीए एसोसिएशन के अध्यक्ष दिनेश जैन ,सचिव विकास भंडारी पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र जैन, अर्पित नागदा ,नितेश भदादा, जय विजयवर्गीय ओर इंटक संगठन के गोपाल गुरु, खुबचंद्र शर्मा, त्रिदेव पाटीदार, विक्रम विद्यार्थी, वीरेंद्र पंडित, दशरथ सिंह चंद्रावत, सुनील गुप्ता, मनोज भटनागर, जगदीश पाटीदार, दिलीप शर्मा, जगदीश शर्मा, नरेंद्र नवले, कन्हैयालाल हाडा तथा समाजसेवी कमल कोठारी व प्रजापति समाज के प्रतिनिधि गण सर्व श्री बाबूलाल प्रजापत, विजय नागौरे ,राहुल प्रजापत, पवन प्रजापत ,शांतिलाल प्रजापत, किशोर सरसिया, जगदीश सरसिया, किशोर लूनिया, विक्रम प्रजापत, त्रिलोक प्रजापत ,जीवन प्रजापत, लक्ष्मी चंद प्रजापत, अमन प्रजापत, दिनेश प्रजापत, दीपक प्रजापत, मनोहर प्रजापत, रवि प्रजापत, दिलीप प्रजापत, लखन प्रजापत, दिलीप नागौरे भी अभियान में सम्मिलित हुए। गांधी चौराहा पर प्रतिदिन प्रात 10 से 12 तक 2 घंटे चलने वाले पोस्टकार्ड अभियान में श्रीमती सीमा चोरडिया अजीजुल्ला खान खालिद बंसीलाल टॉक और राधेश्याम मालवीय पूरी समय सेवा प्रदान कर रहे हैं अभियान के आठवें दिन मंदसौर नागरिक मंच के समन्वयक ब्रजेश जोशी, कोर ग्रुप के हिम्मत डांगी ,उमेश पारिख भी उपस्थित थे। यह जानकारी कार्यालय प्रभारी प्रदीप भाटी ने दी है।

आज बड़े साथ ओसवाल समाज और माली समाज होंगे सहभागी– मंदसौर नागरिक मंच के समन्वयक नरेंद्र अग्रवाल, ब्रजेश जोशी ने बताया कि पोस्टकार्ड अभियान के दसवें दिन बडे साथ ओसवाल समाज और माली समाज के प्रतिनिधि पोस्टकार्ड अभियान में शामिल होंगे।

मानसिक स्वास्थ्य

संवेदीकरण कार्यक्रम सम्पन्न

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। महिला एवं बालिका सशक्तिकरण जागरूकता हेतु शक्ति अभिनंदन अभियान अंतर्गत महारानी लक्ष्मीबाई स्कूल मंदसौर में मानसिक स्वास्थ्य संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉक्टर ऋषिकेश्वर त्रिवेदी ने उपस्थित प्रतिभागी बालिकाओं को मानसिक रूप से सुधारण रहने हेतु आवश्यक जानकारी प्रदान की। ममता हेल्थ फाउंडेशन की ओर से श्रीसैनिक मिश्रा ने बालिकाओं को संबोधित करते हुए बाल अधिकार के संबंध में जानकारी दी। इस दौरान परियोजना अधिकारी श्री बी आर मुजालदे, प्राचार्य श्री के सी सोलंकी, शिक्षिका श्रीमती रेणुका आचार्य एवं अन्य स्टाफ उपस्थित थे।

महाविद्यालय में एड्स जागरूकता कार्यक्रम सम्पन्न

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। शासकीय कन्या महाविद्यालय, मंदसौर के प्राचार्य डा.सुधीर रायजादा ने बताया कि महाविद्यालय में रेड रिबन क्लब एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वाधान में एडस जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वरिष्ठ प्राध्यापक डा.पी.एल. पाटीदार द्वारा उद्बोधन में आपने एडस जागरूकता के अंतर्गत एडस फैलेने के कारणों से संबंधित सारी बातें बताई, इनसे बचने के एवं इसके बारे में जागरूक होने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि कैसे आज का युवा इसकी चपेट में आ रहा है। हमें अपने संस्कारों और पूर्वजों की सीख पर डटे रहने की जरूरत हैं। विश्व में 2023 के अंत तक 39.9 मिलियन लोग एचआईवी से ग्रसित है, जिनमें से 1.4 मिलियन बच्चे है। लगभग 10 लाख लोग इस रोग से प्रतिवर्ष मर जाते है। इसी तरह यदि भारत में देखं तो लगभग 25 लाख लोग एड से प्रभावित है, जिनकी आयु 15 से 49 वर्ष के मध्य है। भारत सरकार राष्ट्रीय एडनियन्त्रण कार्यक्रम के द्वारा वर्ष 2030 तक इस रोग से पूर्णत: मुक्त करने का लक्ष्य तय कर चुकी है। यह अच्छे संकेत है कि एचआईवी संक्रमण के नये मामलों में 19 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। राष्ट्रीय एड नियंत्रण के अंतर्गत भारत सरकार के प्रयास सफल हो रहे है किन्तु समाज को भी इसमें देना होगा। भारतीय संस्कृति एवं हमारे पूर्वजों के संस्कार भी अपनी जीवन शैली में अपनाये तो इस रोग पर नियन्त्रण पाना आसान होगा। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह अपने आचरण व चरित्र से स्वच्छ एवं उज्ज्वल हो। यह स्पष्ट है कि सृष्टिसंरचना का आधार पुरूष व महिला है। हमें संकल्पित होना होगा कि हमारा लाइफ पार्टनर सिर्फ एक होगा तो इस रोग को मिटाने में समाज का महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

महाविद्यालय के प्राचार्य डा.रायजादा ने अतिथि स्वागत करते हुए सभा को संबोधित कर कहा कि प्रत्येक वर्ष 01 दिसम्बर को विश्व एड दिवस मनाया जाता है। एडएक ऐसी बीमारी है जो एचआईवी वायरस के संक्रमण के बाद होती है। एचआईवी संक्रमण के बाद मानवीय शरीर की प्रतिरोधक क्षमता घटने लगती है। वर्तमान में युवाओं में अपने शरीर पर टैटू बनाने का फैशन प्रचलन में है जिसके जरिये भी यह बीमारी फैल रही है। एडनामक इस भयानक बीमारी ने देश की एक बडी आबादी को अपने प्रभाव में जकड रखा है। भारत एचआईवी/एड उन्मूलन की दिशा में लगातार कठिन प्रयास कर रहा है। आपने छात्राओं से आग्रह किया कि वे स्वयं भी इस बीमारी के प्रति जागरूक रहे व दूसरो को भी जागरूक करें। उक्त कार्यक्रम का संचालन डा.अनुराग आर्य एवं आभार डा.राजश्री ठाकुर कार्यक्रम अधिकारी रासेयो ने माना। कार्यक्रम में महाविद्यालयीन स्टाफ एवं छात्रायें उपस्थित रही।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर विशेष...

सिर्फ शारीरिक स्वास्थ्य ही नही , मानसिक स्वास्थ्य पर भी उचित ध्यान दे

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस हर साल 10 अक्टूबर को मनाया जाता है. इसकी शुरुआत साल 1992 में विश्व मानसिक स्वास्थ्य संघ ने की थी. यह एक वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य संगठन है जिसके सदस्य और संपर्क 150 से ज्यादा देशों में हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आमजन के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए अनेकों प्रयास किए जा रहे है, वर्ष 2024 में विशेषकर 'कार्य स्थल पर अच्छा मानसिक स्वास्थ्य' की परिकल्पना को लेकर कार्य किया जा रहा है। उचित खान पान, अच्छा जीवन स्तर या बढ़िया शारीरिक स्वास्थ्य का होना ही जीवन में काफी नहीं है, बल्कि इन सबसे महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य उन्नत हो और वो हर परिस्थिति में खुद को अच्छा अनुभव करे। छोटी से छोटी मानसिक परेशानी भी कई बार, बड़ी समस्या को जन्म देती है और जीवन में सामान्य परिस्थितियां भी असामान्य होती दिखाई देती है, लेकिन ये बदलाव एक दम से महसूस नहीं होते है, धीरे - धीरे इनके कारण रोजमर्रा की जिंदगी में परिवर्तन आना शुरू होते जाते है जैसे किसी काम को ज्यादा सोचना, किसी भी बात पर ओवर थिंकिंग, चिडचिडाहट का बढना, मानसिक एकाग्रता का भंग होना, नकारात्मक विचारों का हावी होना, मानसिक अवसाद की और बढना, एकांकी जीवन और नशे की प्रवृति की और ज्यादा रुझान आदि।

कैसे खुद को बाहर निकाले विपरीत परिस्थितियों से– किसी भी समस्या को अपने तक ना रखे बल्कि अपने निकटस्थ साथियों से या परिजन से जरूर सांझा करे। चाय पर चर्चा को रोजमर्रा में शामिल करे। हर बात पर खुद की तुलना किसी से ना करे, आप जैसे है उससे एक कदम बेहतर बनने की और प्रयास करे। ✻ नकारात्मक विचारों और इस विचारधारा के लोगो से दूर रहे। ✻ सफल लोगो की जीवनी को पढे, सकारात्मक बातों का अनुसरण करे। ✻अपनी रूचि के काम को दिनचर्या मे कुछ समय जरूर दे। ✻ योग और संगीत को दिनचर्या का हिस्सा बनाए। ✻ आवश्यकता अनुसार मनोचिकित्सक से परामर्श जरूर ले।

डॉ हिमांशु यजुर्वेदी
मनोचिकित्सक एवं अपराध विश्लेषक

कलेक्टर ने किया डीकेन में छात्रावास का निरीक्षण

नीमच, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चन्द्रा ने बुधवार को अपने जावद क्षेत्र के भ्रमण दौरान डीकेन में आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित 50 सीटर सीनियर बालक छात्रावास डीकेन का आकस्मिक निरीक्षण कर, उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया। उन्हों ने छात्रावास में स्वीकृत सीटें, दर्ज विद्यार्थी एवं रिक्त सीटों के बारे में जानकारी ली। बताया गया, कि छात्रावास में वर्तमान में 29 विद्यार्थी प्रवेशरत है। शेष सीटों पर विद्यार्थियों ने प्रवेश नहीं लिया है। इस पर कलेक्टर ने निर्देश दिए, कि अभिभावकों, पालकों को प्रेरित कर, शेष सीटों पर भी विद्यार्थियों को प्रवेश दिलाए। कलेक्टर ने नगर परिषद डीकेन द्वारा 10.40 लाख की लागत से विकसित किए जा रहे अमृत 2.0 हरित क्षेत्र विकास (गार्डन) का भी निरीक्षण किया और गार्डन में हुए विभिन्नत कार्यों का अवलोकन किया। उन्होंने गार्डन में शेष लाईटिंग कार्य, विद्युत पोल के कार्य एवं शेष अन्य कार्य एक माह में पुरा करवाने के निर्देश दिए। इस मौके पर जिला पंचायत सी.ई.ओ. श्री अरविंद डामोर, एस.डी.एम. जावद श्री राजेश शाह, सी.एम.ओ. श्रीमती प्रमिला ठाकुर एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने रतनगढ़ एनआरसी का किया निरीक्षण

नीमच, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चन्द्रा ने बुधवार को जिले के रतनगढ़ में संचालित पोषण पुनर्वास केंद्र का निरीक्षण कर, इस केंद्र में भर्ती सेम एवं मेम श्रेणी के बच्चों की जानकारी ली। उन्हों ने एन.आर.सी. में भर्ती बच्चों की माताओं से चर्चा कर, बच्चोंभ के स्वास्थ्य में हो रहे सुधार, मिलने वाली मजदुरी की राशि एवं भोजन की व्यवस्था रात्रि में रूकने की व्यवस्थाआदि के बारे में विस्तामर से जानकारी ली। निरीक्षण दौरान एन.आर.सी. रतनगढ़ में 14 बच्चें भर्ती होकर, उपचारत पाए गए। दो बच्चों को बुधवार को सुबह ही डिस्चा र्ज किया गया है। एन.आर.सी. में कलेक्ट र के निर्देशों के बाद निर्धारित 10 सीटों से अधिक बच्चोंय को महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा भर्ती करवाया जा रहा हैं। कलेक्टंर ने एन.आर.सी. संचालन एवं व्यावस्थायओं की सराहना की। इस मौके पर जिला पंचायत सी.ई.ओ. श्री अरविंद डामोर, एस.डी.एम. श्री राजेश शाह, जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी श्री ताराचंद मेहरा, बी.एम.ओ. डॉ. राजेश मीणा एवं अन्यर अधिकारी उपस्थित थे।

एड्स जागरूकता पर व्याख्यान एवं रैली सम्पन्न

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। एच.आई.वी. सघन जागरूकता अभियान के तहत प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर के प्राचार्य डॉ. डी.सी. गुप्ता ने बताया कि मध्य प्रदेश राज्य एडनियंत्रण समिति के निर्देशानुसार रेड रिबन क्लब एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा एच.आई.वी. एड जागरूकता विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ एवं रैली निकाली गई।

एच.आई.वी./एड सघन जागरूकता अभियान के अंतर्गत विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए श्री राजेश जी रजक (क्लिनिकल सर्विस ऑफिसर, जिला एडरोकथाम नियंत्रण इकाई, सीएमएचओ ऑफिस मंदसौर) ने कहा कि एडएक लाइलाज बीमारी है। किंतु चिकित्सकीय परामर्श एवं उचित दवाई के साथ एडपीडित व्यक्ति भी एक अच्छा जीवन जी सकता है। एच.आई.वी. मानव में ही पाया जाता है। इसके फैलने के चार कारण है। 1. असुरक्षित यौन संबंध बनाने से, 2.एच.आई.वी. संक्रमित सुई या सिरिंज के साझा उपयोग से, 3.एच.आई.वी. संक्रमित मां से होने वाले शिशु को 4. एच.आई.वी. संक्रमित रक्त से, इसके अलावा कोई अन्य कारण नहीं है। एच.आई.वी. के संक्रमण का पता 1 से 10 वर्ष के मध्य लगता है। व्यक्ति संक्रमित होते हुए भी स्वस्थ रहता है। यही कारण है कि सरकार सभी से अपनी स्वेपच्छान से जांच कराने की बात कर रही है। इसके लक्षण प्रमुख रूप से एक माह तक लगातार बगैर किसी कारण के बुखार का आना, एक माह तक लगातार दस्त का आना या रूक रूक कर, एक माह में 10 प्रतिशत वजन का कम होना इत्यादि है। मगर खून की जांच के बगैर किसी को लक्षण के आधार एच.आई.वी. संक्रमित नहीं बताया जा सकता है। इसलिए रक्तत की जॉच के बाद ही एच.आई.वी. के संक्रमण का पता चलता है। जिन्हें जांच करानी है वह अपने नजदीक के स्वातस्य्बा केन्द्रह पर जाकर जांच करा सकते हैं। जांच एवं परामर्श नि:शुल्क है। सावधानी एवं जानकारी से एच.आई.वी. के संक्रमण से बचा जा सकता है। एडकी जानकारी के लिए नाकों की हेल्पलाइन न. 1097 डायल कर जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसके साथ ही यौन रोग एवं क्षय रोग के विषय में भी विद्यार्थियों को जानकारी दी। जिला संगठक, रासेयो डॉ. के. आर. सूर्यवंशी ने कहा कि रेड रिबन क्लब क्लब इकाई जिला चिकित्सालय मंदसौर के सहयोग से एड जागरूकता पर नुक्कड़, नाटक, व्याख्यान, जागरूकता रैली इत्यादि आयोजित करती रहती है, जिससे लोगों को इस लाइलाज बीमारी से बचाया जा सके। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अनिल कुमार आर्य ने कहा कि रेड रिबन क्लब समय-समय पर रक्तदान शिविर, ब्लड ग्रुप जांच शिविर, हीमोग्लोबिन टेस्ट, नशा मुक्ति, स्वास्थ्य शिविर, नेत्रदान एवं देहदान हेतु जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को जागरूक करता है। इस अवसर कार्यक्रम अधिकारी डॉ.अनिल कुमार आर्य के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने अयोध्या एवं इंदिरा बस्ती में एड जागरूकता रैली निकाली ।एड जागरूकता विषय पर आयोजित कार्यक्रम में पर्यावरण प्रेमी श्री मनीष भावसार, प्रो.संजय पवार समेत महाविद्यालय के विद्यार्थी एवं एनएसएस स्वयंसेवक उपस्थित थे।

कलेक्टर ने बधावा में प्राथमिक शाला एवं आंगनवाड़ी केंद्र का किया निरीक्षण

नीमच, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चन्द्राश ने बुधवार को जावद क्षेत्र के भ्रमण दौरान रतनगढ के समीपस्थ ग्राम बधावा में प्राथमिक विद्यालय एवं आंगनवाडी केंद्र का आकस्मिक निरीक्षण किया। कलेक्टर ने प्राथमिक विद्यालय में कक्षा तीसरी में जाकर, अध्यापन कार्य एवं छात्र, छात्राओं की उपस्थिति का जायजा लिया। उन्होंने तीसरी कक्षा में दो छात्राओं से क्रमश: 17 एवं 19 का पहाडा पूछकर, उनके शैक्षणिक स्तर को परखा, साथ ही कक्षा चौथी में उपस्थित छात्र अनमोल एवं प्रियंका से गुणा एवं भाग के सवाल ब्लेक बोर्ड पर हल करवाकर, उनके शैक्षणिक स्तर का जायजा लिया। प्रियंका व अनमोल द्वारा गणित के सवाल हल करने पर कलेक्टर ने सराहना की। उन्होंने आंगनवाडी केंद्र में दर्ज बच्चों की संख्या, उपस्थित बच्चों की संख्या, आंगनवाडी में उपलब्ध अर्ली लर्निंग कीट एवं टी.वी. स्क्रीम की व्यवस्था, बच्चो के लिए फर्नीचर एवं खेल सामग्री की उपलब्धता की जानकारी भी ली। कलेक्टर ने आंगनवाडी कार्यकर्ता से चर्चा कर, आंगनवाडी केंद्र में दर्ज बच्चों में से सेम एवं मेम श्रेणी के बच्चों के बारे में भी जानकारी ली। उन्होंने आंगनवाडी कार्यकर्ता से आंगनवाडी में बच्चों को प्रदान किए जाने वाले नाश्ते एवं भोजन की व्यंवस्था के बारे में भी पूछा। साथ ही आंगनवाडी के सभी बच्चो के सम्पूर्ण टीकाकरण की जानकारी भी ली।

बधावा में कृषक सुविधा केंद्र (सी.एच.सी.) का किया निरीक्षण – कलेक्टर श्री हिमांशु चन्द्रा ने ग्राम बधावा में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (वाटर शेड) के तहत ग्राम बधावा में स्थापत किए गए कस्टम हायरिंग सेंटर (सी.एच.सी.) का निरीक्षण कर, एफ.पी.ओ. का गठन और सदस्य संख्या की जानकारी ली। उन्होंने एफ.पी.ओ. के सदस्यों से चर्चा कर, सी.एच.सी. सेंटर में क्षेत्र के किसानों की मांग अनुसार कृषि उपकरण यंत्र, खाद, बीज एवं मुंगफली की ग्रेडिंग, क्लीानिंग एवं प्रोसेसिंग के उपकरण स्थापित करने के निर्देश भी दिए। कलेक्ट र ने ग्राम बधावा में जल जीवन मिशन द्वारा सी.सी. रोड एवं सडकों के रेस्ट्रोरेशन कार्य का भी गांव की गलियों में मौके पर अवलोकन कर, रेस्ट्रोरेशन कार्य की गुणवत्त् का जायजा लिया। कलेक्टर ने वाटरशेड परियोजना के तहत ग्राम बधावा में ग्राम पंचायत के पास 6.32 लाख की लागत से मियावाकी पद्धति से किए गए पौधा रोपण कार्य का भी अवलोकन किया। ग्रामीणों ने कलेक्टर से गांव में विद्युत ट्रांसफार्मर जल जाने से ट्रांसफार्मर की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करवाया। साथ ही मुंगफली से ऑईल निकालने के लिए सी.एच.सी. में मशीनें स्थापित करवाने का आग्रह भी किया।

श्री मदन मसानिया की देह पंच तत्व में विलीन

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। सेवानिवृत खेल अधिकारी, कांग्रेस के वरिष्ठनेता एवं बचपन बचाओ आंदोलन के पूर्व जिला अध्यक्ष श्री मदन मसानिया के निधन के समाचार से खेल जगत के साथ राजनीति एवं समाज सेवा के क्षेत्र में शोक की लहर दौड गई । उनके असमय निधन से समूचे क्षेत्र को अपूर्णनीय क्षति हुई है।

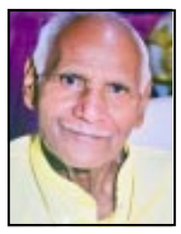

उनकी अंतिम यात्रा उनके बसेर चौक स्थित निवास से निकली जो नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई मुक्तिधाम पहुंची जहां उनके पुत्रों अनिल मसानिया, अंतिम मसानिया एवं परिजनों ने उन्हें मुखाग्नि दी। इसके पूर्व उनके निवास पर शहर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी मन्दसौर की ओर से उन्हे पार्टी का ध्वज समर्पित कर अंतिम बिदाई दी। मुक्तिधाम पर आयोजित शोक सभा में पूर्व विधायक श्री नवकृष्ण पाटिल, जिला कांग्रेस पूर्व अध्यक्ष प्रकाश रातडिया, कांग्रेस नेता महेंद्र सिंह गुर्जर, शहर कांग्रेस अध्यक्ष डॉ राघवेंद्रसिंह तोमर, रविन्द्र सिंह रांका, वरिष्ठपत्रकार विक्रम विद्यार्थी, शिक्षाविद कैलाशचंद्र पाण्डेय, दशपुर प्रेस क्लब अध्यक्ष नेमीचंद राठौर, जितेंद्र देवडा, डॉ आर के द्विवेदी, महेश दुबे, तरुण खींची, खूबचंद पहलवान, राजनरायण लाड, महेश मोदी, पूर्व पार्षद विजय गुर्जर ने अपनी शोक संवेदनाएं व्यक्त की। शोक सभा का संचालन पंडित अरुण शर्मा ने किया। अंतिम यात्रा में डॉ संतोष शुक्ला, मोहम्मद हनीफ शेख, राहुल नाहटा, पंडित दिलीप शर्मा, सुरेंद्र चौहान बंदूकवाला, विनय दुबेला, निर्मल बसेर, राजेश बंधवार, वीरेंद्र शर्मा, राकेश यादव, वहीद जैद्दी, जगदीश बंधवार, टेकचंद पटेल, बंशीलाल परमार, दिलीप देवडा, राजू महते, जितेंद्र सिंह चंद्रावत, शैलेंद्र पुरोहित, जितेंद्र चौहान, मनीष बग्गा, शैलेंद्र श्रीवास्तव, अब्दुल रज्जाक, मुरली देशमुख, संजय पोरवाल, शिवलाल रारा, मोहनसिंह, राकेश बसेर, विनोद भाटी, राजेश हींगड, अजय नैन, मनीष रूनवाल, दिलीप ग्वाला सहित बडी संख्या खेल, राजनीति एवं सामाजिक क्षेत्र प्रतिनिधि शामिल हुए।

खानपुरा में होने वाले दशहरा उत्सव की तैयारी को लेकर नपाध्यक्ष ने निरीक्षण किया

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी खानपुरा में नामदेव समाज के द्वारा दशहरा उत्सव का आयोजन किया जाना है इस उत्सव की तैयारी को लेकर नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर ने नगर पालिका के सभापतिगणो, पार्षदगणों के साथ खानपुरा के दशहरा उत्सव का निरीक्षण किया और नगरपालिका कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

नपाध्यक्ष श्रीमती गुर्जर के साथ इस मौके पर नगरपालिका सभापतिगण श्रीमती निर्मला नरेश चंदवानी, श्रीमती दीपमाला मकवाना, क्षेत्रीय पार्षद भावना जयप्रकाश पमनानी युसूफ गोरी कमलेश सिसोदिया माया भावसार नगरपालिका कार्यपालन यंत्री श्री पी एस धार्वे, शासकीय महाविद्यालय जनभागीदारी समिति अध्यक्ष नरेश चंदवानी पूर्व पार्षद राकेश भावसार, नगरपालिका उपयंत्री श्री एसपी सिंह नामदेव समाज के अध्यक्ष अशोक बघेरवाल, सचिव राजेश मेडतवाल एवं कई गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे। नपाध्यक्ष श्रीमती गुर्जर को नगरपालिका कार्यपालन यंत्री श्री धारवे ने अवगत कराया कि रावण की प्रतिमा का रंग रोगन वह मरम्मत कार्य जो प्रतिवर्ष होता है वह इस वर्ष भी पूर्ण कर लिया गया है यहां के मैदान की सफाई एवं अन्य कार्य भी जारी है दशहरा उत्सव के लिए नपाध्यक्ष श्रीमती गुर्जर ने सभी आवश्यक कार्य करने के निर्देश भी दिए।

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	99	2100	2700
उडद	134	6000	7200
सोयाबीन	5800	3800	4700
गैहु	2739	2810	3260
चना	110	4800	6700
मसुर	145	5796	6121
धनिया	265	5126	6700
लहसुन	10150	15000	31000
मैथी	770	4901	5981
मुंगफली	2200	3500	5600
अलसी	16740	5601	6121
सरसो	448	5640	5885
तारामीरा	2	5000	5000
इसबगोल	68	10800	12400
प्याज	1666	1100	4210
कलोंजी	15	16000	18781
तुलसी बीज	17	13152	21900
डॉलर	56	9000	10800
तिल्ली	43	10001	12701
जौ	20	2540	2610
मटरसुखी	4	6200	7601
असालीया	71	10101	13300
मूंग	5	5300	6000

कार्यालय :- नवीन कुमार निमावत, एडवोकेट
जवाहर मार्ग, जावद, जिला-नीमच (म.प्र.) मो.नं. 9425033929, 9806883929

✻✻ जाहिर सूचना ✻✻

बनाम:- सर्व साधारण

इस जाहिर सूचना के द्वारा सर्व साधारण एवं संबंधित पक्षकारान को सूचित किया जाता हैं कि मेरे व्यवहारी ने श्री सुरेश पिता हीरालाल जी जाति धाकड, निवासी ग्राम बोरखेडी, तहसील जावद, जिला नीमच (म.प्र.) के स्वामित्व व आधिपत्य की भूमि प.ह.नं. 14, ग्राम बोरखेडी, तहसील जावद में स्थित कृषि भूमि सर्वे क्रमांक 205/1 रकबा 0.821 हें. भूमि जिसकी चतुरसीमा उत्तर में - सर्वे क्रमांक 204, 206, 208 की भूमि, दक्षिण में - सर्वे क्रमांक 205/2 की भूमि, पूर्व में - सर्वे क्रमांक 202 की भूमि, पश्चिम् में - सर्वे क्रमांक 209 की भूमि एवं सर्वे क्रमांक 225/2 रकबा 0.789 हें. भूमि जिसकी चतुरसीमा उत्तर में - सर्वे क्रमांक 221 की भूमि, दक्षिण में - सर्वे क्रमांक 225/1 की भूमि, पूर्व में - सर्वे क्रमांक 230 की भूमि, पश्चिम में - सर्वे क्रमांक 224 की भूमि, को मेरे पक्षकार ने खाते-खसरो में वर्णित भूमिस्वामी से क्रय करने का मौखिक अनुबंध किया हैं। मौखिक अनुबंध अनुसार मेरा व्यवहारी उक्त क्रय की जा रही सम्पत्ति के विक्रय धन का प्रतिफल विक्रेता को अदा कर विक्रय पत्र का पंजीयन करायेगा। उक्त सम्पत्ति पर किसी भी व्यक्ति या संस्था का किसी भी प्रकार का कोई रहन, बय, दान, कब्जा व ऋण भार नहीं होने संबंधी विक्रेता द्वारा बताया गया हैं। उक्त सम्पत्ति के विक्रय पत्र का पंजीयन मेरे व्यवहारी के पक्ष में विक्रय धन राशि मेरे व्यवहारी द्वारा विक्रेता को अदा कर उप पंजीयक कार्यालय जावद में विक्रय पत्र का पंजीयन करवाया जायेगा जिस किसी व्यक्ति, संस्था को कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेज साक्ष्य के सात दिवस में कार्यालयीन समय में मेरे समक्ष प्रस्तुत करें। पंजीयन के बाद किसी भी प्रकार की आपत्ति पेश की जाती हैं तो मेरे व्यवहारी के मुकाबले व्यर्थ एवं प्रभावशून्य होगी जो सभी पक्षो पर बंधनकारी होगी।

भवदीय
नवीन कुमार निमावत, एडवोकेट, जावद

दिनांक:- 10.10.2024

कार्यालय:-जितेन्द्र सन्मुखानी, एडवोकेट
गौल चौराहा सर्कल, मंदसौर म.प्र. एवं हजारी नगर, रामटेकरी, मंदसौर म.प्र.
मोबाईल नम्बर 9826393563, 9039505251

जाहिर सूचना आवासीय प्लाट स्थित देतवार गली, नरसिंहपुरा, मंदसौर म.प्र.

इस जाहिर सूचना के माध्यम से हर खास व आम को सूचित किया जाता है कि मेरे व्यवहारी ने कोमल पिता श्री कन्हैयालाल जी अडानिया, जाति-कुमावत, निवासी-नरसिंहपुरा, मंदसौर म0प्र0 के स्वामित्व व आधिपत्य का आवासीय प्लाट नम्बर 342, जो कि देतवार गली, नरसिंहपुरा, नगरपालिका पुराना वार्ड नम्बर 37, नगरपालिका नया वार्ड नम्बर 36, मंदसौर म.प्र. मे स्थित होकर प्लाट का क्षेत्रफल 450 वर्गफीट को क्रय करने का सौदा तय कर बयाने पेटे राशि भी अदा कर दी है, तथा शीघ्र ही उक्त प्लाट के दस्तावेज विक्रय पत्र का पंजीयन एवं निष्पादन करवाया जा रहा है।

उक्त प्लाट के विक्रय के संबंध में किसी भी व्यक्ति, संस्था आदि का कोई संव्यवहार हो, या कोई भार, बोझ हो तो वह इस जाहिर सूचना पत्र के प्रकाशन के सात दिवस के भीतर मय लेखी प्रमाण के आपत्ति मेरे समक्ष न्यायालयीन समय में प्रस्तुत करे, अन्यथा बाद गुजरने म्याद मेरे पक्षकार द्वारा उक्त प्लाट के दस्तावेज विक्रय पत्र का पंजीयन अपने हक में करवा लिया जावेगा, जिसके पश्चात् किसी प्रकार की कोई आपत्ति या दावा मेरे पक्षकार के हितो के मुकाबले मान्य नही होगा, तथा ऐसी आपत्ति शून्य मानी जावेगी। अनुबंधित प्लाट की चर्तु:सीमा निम्नानुसार है:- पूर्व में :- मोहनजी जाकडा का मकान, पश्चिम में :- हीरालाल जी का मकान, उत्तर में :- कॉलोनी सडक, दक्षिण में :- आम रास्ता, पैमाईश :- पूर्व से पश्चिम 15 फीट, उत्तर से दक्षिण 30 फीट। कुल क्षेत्रफल:- 450 वर्गफीट

भवदीय
जितेन्द्र सन्मुखानी, एडवोकेट, मंदसौर म.प्र.
वास्ते-व्यवहारी

दिनांक:- 09/10/2024
स्थान :- मन्दसौर

रतलाम में सात व्यापारियों का 4 किलो सोना लेकर भागा दुकानदार, 3 करोड़ से अधिक कीमत

रतलाम, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। शहर के सोना व्यापारियों (सराफा दुकानदारों) का सोना लेकर बंगाली कारीगरों द्वारा भागने के कई घटनाएं हो चुकी है लेकिन इस बार एक दुकानदार ही सात व्यापारियों का करीब तीन करोड रुपये कीमत का चार किलो सोने के जेवर लेकर भाग गया। दुकानदार के गायब होने की खबर फैलने से सराफा बाजार में हडकंप मच गया तथा व्यापारियों ने माणकचौक थाने पहुंचकर शिकायत की। सोना लेकर भागे दुकानदार का पता नहीं चल पाया है। वह अपना मोबाइल फोन दुकान पर छोड गया है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है।

ग्राहकों को दिखाने ले गया था गहने–व्यापारियों ने पुलिस को बताया कि मंगलवार दोपहर करीब साढे बारह बजे से तीन बजे के बीच भाविका ज्वेलर्स दुकान का संचालक जीवन सोनी बाजार के सात बडे व्यापारियों सुनील पोरवाल, गोविंग अग्रवाल, कान्हा राठौर, अंशु पामेचा, शशांक पुरोहित, मयंक पोरवाल, सौभाग्यमाल बसंतीलाल जेवर्ल्स की दुकानों से करीब चार किलो सोने के जेवर ग्राहकों को दिखाने के लिए ले गया था।

गहने लेकर वापस नहीं आया व्यापारी–ग्राहकों को जेवर दिखाने के बाद दुकानदारों के जेवर वापस उनकी दुकान पर जाकर देने का नियम है, लेकिन बाद में उसने दुकानदारों के जेवर वापस नहीं दिए। तब दोपहर करीब साढे तीन बजे जब दुकानदार जीवन की दुकान पर पहुंचे तो वह दुकान पर नहीं था। मुनिम से पूछने पर उसने बताया कि जीवन के अपने बेटे को अस्पताल ले गए हैं।

दुकान पर लगा मिला ताला–शाम को दुकानदार पुन: जीवन की दुकान पर पहुंचे तो दुकान पर ताला लगा था। इसके बाद उसके घर कल्याण नगर पहुंचे तो घर पर ताला लगा मिला। रात में व्यापारियों ने थाने पहुंच कर पुलिस को घटना की जानकारी दी। पुलिस ने जांच शुरू की पता चला कि जीवन मोबाइल फोन अपनी दुकान में ही छोडकर गया है। उसकी स्कूटी महू-नीमच हाईवे पर चौपाल सागर के पास खडी मिली। पुलिस ने आसपास उसे तलाश किया लेकिन उसका पता नहीं चला।

पैतृक गांव में भी नहीं मिला–व्यापारियों ने जीवन की पत्नी को फोन किया तो पत्नी ने बताया कि वह बच्चों व सास-ससुर के साथ दो दिन से अपने पैतृक गांव उज्जैन जिले के ग्राम माकडौन में है। जीवन यहां नहीं आया है। इसके बाद पुलिस दल माकडौन पहुंचा लेकिन जीवन वहां भी नहीं मिला। पुलिस ने उसके रिश्तेदारों के यहां भी उसे तलाश किया लेकिन वह वहां भी नहीं मिला।

आठ साल पहले आया था रतलाम–व्यापारियों के अनुसार जीवन आठ वर्ष पहले रतलाम आया था। उसने तीन वर्ष तक रामगढ क्षेत्र में दुकान संचालित की तथा उसके बाद से त्रिपोलिया गेट क्षेत्र में दुकान संचालित कर रहा था। व्यापारी शशांक पुरोहित ने मंगलवार रात माणकचौक थाने पर आरोपित जीवन सोनी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई।

दुकानदारों ने विश्वास में दिए गहने–उन्होंने पुलिस को बताया कि दोपहर करीब सवा बजे जीवन सोनी उनकी दुकान पर आया था, तथा कहा था कि मेरी दुकान पर ग्राहक आए हैं, उन्हें जेवर दिखाना है। इसके बाद वह करीब 700 ग्राम वजनी सोने की 21 चेन ग्राहकों को दिखाने के लिए ले गया था। काफी देर बाद वह वापस चेन लेकर नहीं आया। उन्होंने राम सोनी को जीवन की दुकान पर उसे देखने भेजा तो वह नहीं था। जीवन के मुनिम ने बताया कि जीवन सेठ अपने पुत्र को अस्पताल ले गए हैं। तलाश करने पर भी जीवन नहीं मिला। उसे मोबाइल फोन पर कॉल किया तो उसका मोबाइल फोन उसके मुनिम के पास ही था। उसके घर तलाश किया तो वहां ताला लगा था। वह अन्य दुकानदारों के भी जेवर ले गया है लेकिन जेवर वापस नहीं कर हडप लिए हैं। पुलिस के अनुसार जीवन सोनी के खिलाफ बीएनएस की धारा 316 (2) के तहत प्रकरण दर्ज कर उसकी तलाश की जा रही है।

आरोपित जीवन सोनी की तलाश की जा रही है। रतलाम तथा माकडौन स्थित मकान पर नहीं मिला है। उसकी तलाश में शाजापुर, आगर मालवा आदि स्थानों पर टीमें भेजी है।

अभिनव कुमार बारंगे, सीएसपी

जनसुनवाई में प्राप्त शिकायत पर तहसीलदार जीरन एवं नप की टीम ने की कार्रवाई...

जीरन सामुदायिक भवन के आसपास से हटाया अवैध अतिक्रमण

नीमच, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। पिछले तीन बार से जनसुनवाई जीरन नगर परिषद सभाकक्ष मे की जा रही है। जीरन नगर वासियों द्वारा जीरन मे सामुदायिक भवन के आसपास के अतिक्रमण की निरंतर शिकायते जनसुनवाई में की जा रही थी। उक्त शिकायतों को संज्ञान मे लेते हुए कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा के मार्गदर्शन मे तहसीलदार श्री नवीन गर्ग द्वारा मुख्य नगर पालिका अधिकारी नगर परिषद जीरन को उक्त अतिक्रमण चिंहित कर हटाने के निर्देश गए थे। नगर परिषद की टीम द्वारा जनसुनवाई में प्राप्त शिकायत पर कार्रवाई करते हुए चीताखेडा दरवाज़ा स्थित सामुदायिक भवन के पास हुए अवैधअतिक्रमण एवं गांधीनगर स्थित मांगलिक भवन के चारो और अस्थायी मकान बनाकर एवं भूमि को घेरकर कई लोगो द्वारा किया गया अतिक्रमण हटाया दिया गया है इस तरह लगभग 60 हजार वर्ग फीट भूमि को अतिक्रमण से मुक्त करवाया गया है।

तहसीलदार जीरन श्री नवीन गर्ग ने बताया कि प्रशासन द्वारा अतिक्रमण से मुक्त कराई गई जमीन की कीमत 3 करोड रुपए से अधिक है। कार्यवाही मे तहसीलदार नवीन गर्ग, मुख्य नगर पालिका अधिकारी नंद लाल प्रजापति, पटवारी मनोहर पाटीदार, राजस्व निरीक्षक योगेश , नगर परिषद की इंजीनीयर श्रीमतीअन्नू सोलंकी उपस्थित थी।

हाईवे पर पलटा ट्रक, तीन घायल

नीमच, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। महू-नसीराबाद हाईवे पर हरकियाखाल पुलिस चौकी के पास मंगलवार-बुधवार की रात एक भीषण सड़क हादसा हो गया। जहां एक तेज रफ्तार ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। इस हादसे में ट्रक सवार तीन लोग घायल हो गए। जिन्हें 108 एंबुलेंस की मदद से नीमच के बड़े अस्पताल लाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। घायलों को एंबुलेंस पायलट मुकेश और पीएमटी आशीष शर्मा ने स्थानीय लोगों और पुलिसकर्मियों की सहायता से अस्पताल पहुंचाया। इस हादसे में दो लोगों को गंभीर और एक को मामूली चोट आई है। घायलों में बिहार निवासी श्रीधर, हरियाणा निवासी तोप सिंह और मट्ठासिंह शामिल हैं। वहीं ट्रक में हरियाणा के जींद से भैंसों को भरकर ले जाया जा रहा था।

अवैध नल कनेक्शन लिया, हटाने की कहा तो दी जान से मारने की धमकी

पिपलियामंडी, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। अवैध नल कनेक्शन करने से मना किया तो गाली-गलौज कर जान से मारने की धमकी दी। मनासाखुर्द के सरपंच उदयराम पिता जगन्नाथ राठौर ने मल्हारगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि रात्रि में पेयजल पाइप लाइन से गोविन्द व मुकेश बावरी ने अवैध कनेक्शन कर लिया। मुझे दिलीपसिंह व जालमसिंह ने इस बात की शिकायत की। सुबह मैं दिलीपसिंह के साथ मौके पर देखने गया तो वहां गोविन्द व मुकेश ने मौके पर खडे जालमसिंह से गाली-गलौज की व कहा कि तूने हमारी जानकारी सरपंच को दी है, तूझे जान से मार देंगे। पुलिस ने दोनों आरोपियों पर केस दर्ज किया।

कार की टक्कर से दम्पत्ति घायल

पिपलियामंडी, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। कार की टक्कर से बाइक सवार दम्पत्ति घायल हो गए। पुलिस ने विवेचना के बाद कार ड्राइवर पर केस दर्ज किया। झार्डा निवासी गोपाल पिता नानूराम धनगर ने नारायणगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि मैं पत्नी वअंतीबाई के साथ बाइक से गांव कचोरी जा रहा था कि मोतीपुरा फन्टे पर कार (एमपी 44 सीए 9714) के ड्राइवर ने तेज व लापरवाहीपूर्वक कार चलाकर टक्कर मार दी। जिससे दोनों को चोंटे आई। पुलिस ने कार ड्राइवर पर केस दर्ज किया।

दशहरा-दीपावली से पहले केंद्र सरकार का तोहफा...

दिसंबर 2028 तक गरीबों को मिलता रहेगा फ्री अनाज

नईदिल्ली, 9 अक्टूबर। केंद्रीय कैबिनट की बैठक आज (बुधवार) हुई। इसके बाद केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार ने सीमावर्ती इलाकों में बुनियादी विकास पर जोर किया है।

2028 तक मिलेगा मुफ्त अनाज का लाभ–वैष्णव ने कहा, 'आज कैबिनेट ने जुलाई 2024 से दिसंबर 2028 तक पीएम गरीब कल्याण योजना और अन्य कल्याणकारी स्कीम्स के तबत फ्री फोर्टिफाइड चावल की आपूर्ति जारी रखने का फैसला किया है।' उन्होंने कहा कि इससे एनीमिया और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी दूर होगी। कुल वित्तीय 17,082 करोड रुपये होगा। वहीं, 100 फीसदी वित्त पोषण सरकार द्वारा किया जाएगा।

समुद्री विरासत परिसर बनाया जाएगा–अश्विनी वैष्णव ने कहा कि मंत्रिमंडल ने मंजूरी दी है कि गुजरात के लोथल में एक राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर विकसित किया जाएगा। प्रस्ताव का उद्देश्य समृद्ध और विविध समुद्री विरासत को प्रदर्शित करना है। साथ ही दुनिया का सबसे बडा समुद्री परिसर बनाना है।

सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास पर जोर–केंद्रीय मंत्री ने कहा, 'सरकार ने सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास पर फोकस किया है।' कैबिनेट ने राजस्थान और पंजाब की सीमावर्ती क्षेत्रों में 4,406 करोड रुपये के निवेश से 2,280 किमी रोड के निर्माण को मंजूरी दी है।

पीएम गरीब कल्याण योजना के फायदे–❊ योजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से निर्धन लोगों को मुफ्त में खाद्य सामग्री देना है। ❊ प्रत्येक राशन कार्ड धारक व्यक्ति को पांच किलो राशन निशुल्क दिया जाता है। ❊ देश के 80 करोड लोग पीएम गरीब कल्याण योजना का लाभ उठा रहे हैं।

पीएम गरीब कल्याण योजना के लिए पात्रता–❊ अगर किसी परिवार में मुखिया महिला विधवा हो या परिवार में कोई बीमार या विकलांग हो। ❊ व्यक्ति 60 वर्ष से ज्यादा या उम्र कम हो। साथ ही जीवन यापन करना मुश्किल हो। ❊ कुम्हार, लोहार, बुनकर, झोपडी में रहने वाला, मोची, मजदूर और कूडा बीनने वाला जो गांव और शहर दोनों क्षेत्रों में हो।

कार्तिक ने जीता कुश्ती में गोल्ड मेडल

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। 68 वीं राज्यस्तरीय शालेय प्री स्टाईल कुश्ती प्रतियोगिता 5 अक्टूबर से 9 अक्टूबर के बीच सीहोर खेली गई जिसमें 9 संभाग के बच्चों ने भाग लिया। उज्जैन संभाग से कार्तिक राजेश राठौर ने गोल्ड मेडल जीता कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्री स्टाईल गीरोको में रोहित राजेश राठौर, बाउनस मेडल जीतकर तीसरा स्थान प्राप्त किया।

छोटी सी उम्र मे अपनी कडी मेहनत से कुश्ती मे अपना जौहर दिखाकर मंदसौर जिले को दिलाया गोल्ड मेडल, कुस्ती कोच ने जानकारी देते हुए बताया की 68 वी राज्य स्तरीय शालेय कुश्ती प्रतियोगिता के बालक मिनी वर्ग मे मंदसौर के कार्तिक राठौर पिता राजेश राठौर ने सीहोर मे आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता में 44 किलो भार वर्ग मे उज्जैन संभाग का प्रतिनिधित्व करते हुए संपूर्ण मध्य प्रदेश मे प्रथम स्थान प्राप्त कर गोल्ड मेडल जीता। कार्तिक आगामी नेशनल प्रतियोगिता मे मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेगे। इस अवसर पर दिलीप ग्वाला, विक्की गौसर, कीर्तिश जैन, प्रवीण दिवाकर, असलम पहलवान, रज्जाक सर, पवन ग्वाला, बम पहलवान, नदीम पहलवान, सन्नी गौसर, ललित चौधरी, राजेश रर्रा, धर्मेन्द्र राठौर, पवन सामीयानी, कोच रवि अहिर नीमच एवं माही मित्र मण्डल सदस्यों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी एवं उज्जवल भविष्य की कामना की।

शक्ति अभिनंदन अभियान अंतर्गत मार्शल आर्ट प्रदर्शन का आयोजन किया

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। महिला एवं बालिका सशक्तिकरण जागरूकता हेतु शक्ति अभिनंदन अभियान अंतर्गत आज महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आईसीएच ग्रुप द्वारा जनता कॉलोनी में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु संचालित इंस्टीट्यूट में मार्शल आर्ट प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मे खेल विभाग की और से मार्शल आर्ट कोच व टीम के द्वारा मार्शल आर्ट का प्रदर्शन कर बालिकाओं को आत्मरक्षा हेतु आक्रामक व रक्षात्मक शैली का प्रशिक्षण दिया गया। ममता हेल्थ फाउंडेशन के माध्यम से बाल अधिकार के संबंध में जानकारी दी। इस दौरान परियोजना अधिकारी श्री बी आर मुजाल्दे , संस्था प्रभारी। खेल विभाग, पर्यवेक्षक सहित अन्य स्टाफ उपस्थित थे।

आज से रजिस्ट्री के नियम बदलेंगे

गवाह नहीं लाने होंगे, घर बैठे ई-केवाईसी से होगा पंजीयन

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। संपत्ति की रजिस्ट्री कराने के लिए अब गवाह साथ लेकर आने की जरूरत नहीं है। कई दस्तावेजों के पंजीयन के लिए उप पंजीयक कार्यालय में उपस्थित होने की जरूरत भी नहीं रहेगी। खरीदार और विक्रेता की पहचान ई-केवाईसी के जरिए हो सकेगी। राज्य सरकार गुरुवार से मंदसौर सहित प्रदेश के सभी 55 जिलों में रजिस्ट्री के नए नियम लागू कर दिए है। इन नियमों को लागू करने के लिए संपदा-2 सॉफ्टवेयर और संपदा-2 विशेष मोबाइल एप को सीएम डॉ. मोहन यादव गुरुवार को लांच करेंगे। इस सॉफ्टवेयर के अमल में आने के बाद प्रदेश में संपत्ति पंजीकरण की प्रक्रिया लगभग पूरी तरह डिजिटल हो जाएगी। संपत्ति की जीआईएस मैपिंग, बायोमैट्रिक पहचान और दस्तावेजों की फॉर्मेटिंग (प्ररूपण) भी स्वत: हो जाएगी।

सफल रहा पायलट प्रोजेक्ट-देवड़ा

उप मुख्यमंत्री व वित्त एवं वाणिज्य कर मंत्री जगदीश देवड़ा के मुताबिक- पायलेट फेज में गुना, हरदा, डिंडौरी और रतलाम जिलों में संपदा-2 का सफलतापूर्वक परीक्षण कर लिया गया है। इस प्रणाली में दस्तावेजों का निष्पादन ई-साइन और डिजिटल सिग्नेचर से किया जाएगा। दस्तावेजों के पंजीयन के लिए व्यक्तिगत उपस्थिति की जरूरत नहीं रहेगी। पंजीयन अधिकारी से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बात कर सकेंगे। व्यक्ति की पहचान के लिए वीडियो केवाईसी का प्रावधान है। दस्तावेजों की ई-कॉपी डिजी लॉकर, वॉट्सएप, और ई-मेल के माध्यम से उपलब्ध होगी। साथ ही ई-स्टाम्प सृजित करने की सुविधा भी होगी। संपत्ति की सर्च प्रक्रिया को भी सरल बनाया गया है।

राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता में चयन

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। दशपुर विद्यालय के होनहार छात्र अंश पालीवाल, नव्य कोठारी तथा जय लवाणी का शालेय अंडर-14 आयु मिनी वर्ग में राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता हेतु चयन हुआ है। यह प्रतियोगिता दिनांक 14 अक्टूबर से 18 अक्टूबर तक शहडोल में आयोजित होगी। इन छात्रों का चयन संभाग स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता में उत्कृष्टप्रदर्शन के आधार पर किया गया। जिसमें मंदसौर की टीम उपविजेता रही थी। चयनित छात्र उक्त प्रतियोगिता में उज्जैन संभाग की टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। उक्त जानकारी उज्जैन संभाग टीम के कोच श्री देवेंद्र बैरागी द्वारा दी गई। छात्रों की उपलब्धि पर विद्यालय प्रबंधन, प्राचार्य प्रिंस वी थॉमस, संस्था सुपरवाइजर श्री हाकीमप्रसाद शर्मा, विद्यालय के क्रिकेट कोच श्री नवीन खोखर, खेल शिक्षक श्री जय विजय सिंह सिसोदिया, श्री आकाश गाजवा ,श्री कुणाल शर्मा, श्री भरत सिंह सहित समस्त विद्यालय परिवार द्वारा शुभकामनाएं देते हुए उसके उज्जवल भविष्य की कामना की।

ट्रक की टक्कर से गौवंश की मौत

पिपलियामंडी, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। ट्रक की टक्कर से गौवंश की मौत हो गई। पुलिस ने केस दर्ज किया। बांसखेडी निवासी नीलेश जैन ने पिपलिया चौकी पर शिकायत दर्ज कराई कि 8 अक्टूबर की रात्रि टीलाखेडा पोस्ट ऑफिस के सामने सडक पर बैठे केडे को ट्रक (एमपी 18 जीए 1092) के ड्राइवर ने तेज व लापरवाहीपूर्वक चलाकर टक्कर मार दी, जिससे केडे की मृत्यु हो गई। पुलिस ने ट्रक ड्राइवर पर केस दर्ज किया।

संस्था युवधर्म द्वारा शक्ति की आराधना का आयोजन संस्था द्वारा...

बेटियों को आत्मरक्षा हेतु नौ दिवसीय प्रशिक्षण

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। नवरात्रि के पावन महापर्व पर संस्था युवधर्म द्वारा मन्दसौर में बेटियों बहनों को आत्मरक्षा प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन जिला व प्रदेश ही नहीं देश में कई स्थानों पर चर्चा का विषय है। इस नवीन पहल को बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला है। नो दिवसीय शक्ति की आराधना वर्तमान समय में बेटियों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण की आवश्यकता को देखते हुए यह आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य बेटियों विकृत मानसिकता के लोग जो बेटीयों की प्रगति में बाधा बनने का कार्य कर रते है। जिसके कारण माता पिता के मन मेअज्ञात भय बेटीयों को सुरक्षा को लेकर बना रखा रहता है। ऐसे समय में हमे सख्त कानून के साथ बेटीयों को आत्मरक्षा में आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करना चाहिए। ताकि बेटीयों की राह में आने वाले जो खराब मानसिकता के लोग है उन्हें सबक सिखाने का साहस और आत्मविश्वास बेटीयों में जागे। यही इस आयोजन का उद्देश्य है। संस्था देश भर में नवरात्र के दिनों में शक्ति की आराधना इस तरह भी की जा सकती है। यह नवाचार का संदेश देने में सफल रही है। और में खास तौर स्व धन्यवाद देना चाहूंगा प्रशिक्षण ले रही बेटीयों के माता पिता को जिन्होंने हमारी पहल को उत्साह पूर्वक स्वीकार किया है। 130 से अधिक बेटीयों को प्रशिक्षण में भेज रहे है। बेटीयों को नियुद्ध, दंड एवं तलवार चलाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। युवधर्म के इस आयोजन के बाद इस दिशा में लोग जागरूक हुए है। आप देखेंगे अगली नवरात्र में मन्दसौर में तो हम बेटीयों के आत्मरक्षा प्रशिक्षण को निरंतर करेंगे ही प्रदेश में कई स्थानों पर प्रशिक्षण के आयोजन होने वाले है। हम गौरवान्वित है कीमाता रानी ने इस पहल के लिए संस्था युवधर्म को चुना। इसमें विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं द्वारा प्रतिदिन आरती की जा रहीं है। जिसमें प्रथम दिवस 3 अक्टूबर को माता जी की।

आरती में आत्मनिर्भरता की प्रतीक ऑटो चालक बहने माता की आरती हेतु आयोजन की अतिथि के रूप के आमंत्रित किया गया। द्वितीय दिवस शहरी क्षेत्र के नगरीय निकाय की महिला जनप्रतिनिधियों द्वारा आरती की गई। तृतीय दिवस महिला चिकित्सक एवं लोटस वैली विद्यालय की शिक्षिका द्वारा की चतुर्थ दिवस में राष्ट्रसेविका समिति, दुर्गा वाहिनी, अभाविप की बहनों द्वारा मा की आरती की गई। पांचवे दिवस सरस्वती विद्यालय की शिक्षिकाओं ने आरती का लाभ लिया। छटवे दिवस स्वच्छता प्रहरि बहनों को निमंत्रित किया गया था। मन्दसौर के संजय गांधी उद्यान में आयोजित 'शक्ति की आराधना' का प्रशिक्षण का आयोजन 3 से 11 अक्टूबर तक शाम को 5 से 7 बजे तक चलेगा। 12 अक्टूबर विजया दशमी को बेटियों द्वारा प्रशिक्षण का सार्वजनिक प्रदर्शन एवं बेटियों द्वारा शस्त्र पूजा का आयोजन किया जाएगा। शक्ति की आराधना में आयोजन का आरम्भ माँ की आराधना एवं समापन माता की आरती के साथ होगा।

शहर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी द्वारा भागवत नगर में कन्या पूजन एवं कन्या भोज संपन्न

मंदसौर, 09 अक्टूबर गुरु एक्सप्रेस। बेटी बचाओ के संकल्प के साथ भागवत नगर मंदसौर में कन्या पूजन एवं कन्या भोज का आयोजन शहर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी मन्दसौर अध्यक्ष डॉ राघवेंद्रसिंह तोमर एवं उनके परिवार द्वारा किया गया। आयोजन में बडी संख्या में भागवत नगर सहित आस पास के क्षेत्र की कन्याएं शामिल हुई। यह आयोजन भागवत नगर गरबा पंडाल में आयोजित किया गया। सर्व प्रथम तोमर परिवार के सदस्यों डॉ राघवेंद्रसिंह तोमर, बबीता सिंह तोमर, जितेन्द्र सिंह तोमर, डॉली तोमर के साथ मन्दसौर विधायक एवं जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्री विपिन जैन की प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित श्रीमती सोनाली जैन, जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष इष्ठा भाचावत, महिला कांग्रेस नगर अध्यक्ष अनीता भदौरिया, सामाजिक कार्यकर्ता महेश दुबे, शहर कांग्रेस मंडलम अध्यक्षगण नितेश सतिदासानी, शुभम कामराज, विश्वनाथ सोनी, रमेश बृजवानी, जिला कांग्रेस महामंत्री सुनील शर्मा, कांग्रेस नेता भेरूलाल कुमावत ने कन्या पूजन कर कन्याओं से आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर विनोद सोनी, यशोदा पंवार, प्रभा कुमावत, गायत्री सोनी आदि ने भी कन्या पूजन कर आशीर्वाद लिया।

कार्यालय जिला परिवहन अधिकारी धार (मप्र)

क्रमांक/ मंदसौर दिनांक

जाहिर सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि वाहन स्वामी श्री राजू धनगर पिता जगन्नाथ धनगर निवासी ग्राम भगोरी, तहसील रामपुरा, जिला नीमच की मृत्यु दिनांक 30.04.2024 को हो चुकी है। इनके ट्रेक्टर जिसका रजिस्ट्रेशन क्रमांक एमपी 11 एडी 8039 को इनकी पत्नी रेखा बाई धनगर ने अपने नाम पर अंतरण दर्ज कराने हेतु इस कार्यालय में मूल दस्तावेज प्रस्तुत किये है।

इस प्रकाशन अवधि के सात दिवस में यदि किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो मेरे समक्ष कार्यालय में प्रस्तुत करें अन्यथा इसके पश्चात उक्त ट्रेक्टर को श्रीमती रेखाबाई धनगर के नाम अंतरण कर दिया जावेगा।

इति दिनांक-09.10.2024 जिला परिवहन अधिकारी, धार

न्यायालय तहसीलदार तहसील मल्हारगढ़, जिला-मंदसौर (म.प्र.)

फोन नं.-07424-248579 ई-मेल- tehmalhargarh@gmail.com

प्रकरण क्रमांक/.../अ-20(3)/2024-25 ईश्यू नंबर-778/रीडर-1/2024

मल्हारगढ़, दिनांक-01.10.2024

नगर परिषद नारायणगढ़ (श्री प्रमोद जैन)..... आवेदक

विरुद्ध मध्यप्रदेश शासन..... अनावेदक

❊❊❊ सार्वजनिक सूचना/विज्ञप्ति ❊❊❊

सर्वसाधारण एवं जनता ग्राम नारायणगढ तहसील मल्हारगढ को यह सूचित किया जाता है कि आवेदक नगर परिषद नारायणगढ (श्री प्रमोद जैन) के द्वारा ग्राम नारायणगढ तहसील मल्हारगढ जिला मन्दसौर के सर्वे क्रं. 218 रकबा 1.765 हे. मे से रकबा 150 वर्गमीटर भूमि पर महिला स्नानगृह निर्माण हेतु आवेदन पत्र 'कलेक्टर महोदय जिला मन्दसौर को प्रस्तुत किया गया जो उपखण्ड अधिकारी के माध्यम से जांच प्रतिवेदन हेतु प्राप्त हुआ। जिस पर भूमि आबंटन संबंधी प्रकरण इस न्यायालय के समक्ष विचारांधीन है।

अत: आवेदक नगर परिषद नारायणगढ (श्री प्रमोद जैन) के द्वारा ग्राम नारायणगढ तहसील मल्हारगढ जिला मन्दसौर के सर्वे क्रं. 218 रकबा 1.765 हे. मे से रकबा 150 वर्गमीटर भूमि पर महिला स्नानगृह निर्माण हेतु जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो यह इस विज्ञप्ति के जारी होने के दिनांक से 15 दिवस के भीतर अथवा प्रकरण में नियत पेशी दिनांक-16/10/2024 को स्वयं अथवा किसी वैद्य प्रतिनिधि के माध्यम से प्रस्तुत कर सकता है। नियत समयावधि के उपरांत प्रस्तुत की गई किसी भी आपत्ति पर विचार नही किया जावेगा। सर्व संबंधित सूचित हो।

आज दिनांक 01/10/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुद्रा से उक्त विज्ञप्ति की गई।

तहसीलदार

तहसील मल्हारगढ़

न्यायालय तहसीलदार तहसील मल्हारगढ़, जिला-मंदसौर (म.प्र.)

फोन नं.-07424-248579 ई-मेल- tehmalhargarh@gmail.com

प्रकरण क्रमांक/.../अ-20(3)/2024-25 ईश्यू नंबर-779/रीडर-1/2024

मल्हारगढ़, दिनांक-01.10.2024

नगर परिषद नारायणगढ़ (श्री प्रमोद जैन)..... आवेदक

विरुद्ध मध्यप्रदेश शासन..... अनावेदक

❊❊❊ सार्वजनिक सूचना/विज्ञप्ति ❊❊❊

सर्वसाधारण एवं जनता ग्राम नारायणगढ तहसील मल्हारगढ को यह सूचित किया जाता है कि आवेदक नगर परिषद नारायणगढ (श्री प्रमोद जैन) के द्वारा ग्राम नारायणगढ तहसील मल्हारगढ जिला मंदसौर के सर्वे क्रं. 1807 रकबा 1.65 हे. में से रकबा 3500 वर्गमीटर भूमि पर सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के लिये आवंटन हेतु आवेदन पत्र कलेक्टर महोदय जिला, मन्दसौर को प्रस्तुत किया गया जो उपखण्ड अधिकारी के माध्यम से जांच प्रतिवेदन हेतु प्राप्त हुआ। जिस पर भूमि आवंटन संबंधी प्रकरण इस न्यायालय के समक्ष विचाराधीन है।

अत: आवेदक नगर परिषद नारायणगढ (श्री प्रमोद जैन) के द्वारा ग्राम नारायणगढ तहसील मल्हारगढ जिला मन्दसौर के सर्वे क्रं. 1807 रकबा 1.65 हे. में से रकबा 3500 वर्गमीटर भूमि पर सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के लिये आवंटन हेतु जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह इस विज्ञप्ति के जारी होने के दिनांक से 15 दिवस के भीतर अथवा प्रकरण में नियत पेशी दिनांक 16/10/2024 को स्वयं अथवा किसी वैद्य प्रतिनिधि के माध्यम से प्रस्तुत कर सकता है। नियत समयावधि के उपरांत प्रस्तुत की गई किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा। सर्व संबंधित सूचित हो।

आज दिनांक 01.10.2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुद्रा से उक्त विज्ञप्ति की गई।

तहसीलदार

तहसील मल्हारगढ़

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in